

२- श्री गुराष्टक

दो०-सिंधुरमण गजवदन घन एकरदन घन राज ।

सुफल करहु मन कामना घन ते ज्यूं बन काज ॥१॥

कृपा निधान साहिब मिठिड़ा श्री गरीबि श्रीखण्डि चन्द्र जूं
फरिमाईनि था : बोलिणा सति श्री वाहगुरू, साहिब मिठिड़ा पहिरीं श्री
गणेश भगुवान खे मनाइनि था । हे सिंधूर सां सराबोर गजराज जे मुख
चन्द्र वारा, हिकिड़े दंद वारा, सभिनी देवताउनि जा राजा श्री गणेश देव
मुंहिजूं सभु मन कामनाऊं सफलु करि । जहिड़ी अ तरह बादल पंहिजी
वर्षा सां बननि खे हरियो भरियो थो करे तियं असां खे पंहिजी कृपा वर्षा
सां हरियो भरियो करियो ।

दो०- श्री त्रिपुरारी तात श्रीगणपति मम हृदय वसो ।

मोहिं चित दरिशात लीला अपर अपार गुर ॥२॥

हे श्री शंकर त्रिपुरारी जा बालक श्री गणेश देव असां जे हृदय में
निवासु करियो । तवहां जी कृपा सां प्यारे गुरदेव जी अपार मधुर लीला
असां जे हृदय मन्दिर में बृजिति थिए, असां दिसी उहा गाईदा रहूं ।

छं०- करो वास हृदय प्रभु दीन दयाला,

गिरिकनिया के पुत्र दंड विशाला ॥

तुमरे चरण कमल मम आसरा,

कृपा करि कृपारा युयं दासरा ॥३॥

प्रभु दीन दयाल की लीला रसालं,

प्रभु आत्माराम सदा सद कृपालं ॥

घृण पान सीतल पै धारो जनेशं,

पदात तुम्हारा प्रभु श्री गणेशं ॥४॥

दो०- श्री प्रभु आत्माराम जू श्री हरि राधा कृष्ण,

ज्ञान दास गुर ज्ञान घन गुन की लीला जिश्न ॥५॥

सो०- वंदौ पद अभ्राम श्री गिरिजा पति पुत्र के,
करिहो विविधि प्रणाम सीतल पदारविंद में ॥६॥

दो०- सतिसंगति के संग ते दृढ़ होयो अभ्यास,
जस श्री आत्माराम को प्रगट करो प्रकाश ॥७॥
अकस्मात करुणा करी देख दीन गति दान
लिंग लागी मन भजन की श्री गुर प्रभु आत्माराम ॥८॥

छं०- तुहीं चंडकं सीतला अम्बिका है,
पृथ्वी भूमि आकाश तैं ही किया है ॥
तुहीं मुण्ड मर्दन करंती भवानी,
तुही कालिका मालिका राज धानी ॥९॥
महा योग माया तुम्हीं ईश्वरी है
तुंही तेज अंभो पाताल महीं है ॥
तुहीं योग माया तुहीं वाक वाणी,
भवी भावनी भूत नाशं भवानी ॥१०॥
तुही बृहामी वैश्वी श्री भवानी
तुहीं शंकरी ईश्वरी श्री महानी ॥
महा उक्ति युक्ते रचौ शुद्धि छंदै,
यही दान दीजे दासनि दास वंदे ॥११॥
प्रगट करो जसु श्री दीन दयालं
प्रभु आत्माराम की लीला विशालं ॥
करो पीन पुज कथा में सुगाऊं
तुरा तनय जग मातु इही दान पाऊं ॥१२॥

दो०- बाणी पै बर पाइके पुनि वंदौ घनश्याम
भाषा गुर सब विधि चतुर जै श्री आत्माराम ॥१३॥

सो०- दोइ पाणि अब जोड़ि वंदित मां इन्द्रापती,
माथे चन्दन खोर अवितंस भाल छबि पावहीं ॥१४॥

छं०- गिरिधी कंत जोई तिलक उसी पिता धीकंत
अभिवंदित जलजं पदं वरणत कथा वृतंतं ॥
वरणत कथा वृतंत कृपा चपला पति कीजे
मैं प्रभु अनुगं तेरो मोहि हरि पद रज दीजे ।

श्री आत्माराम लीला अगम अगाधं,

मैं शिशु मुग्ध अजान करो चपला पति मापं ॥१५॥

दो०- कीलालज श्री अंबू प्रभु उसकी रज मुझ देहु
तो कविता नाना विधि करौं जु अलख अभेव ॥१६॥

चौ०- वन्दो श्री नानक सुख सिंधू । जासु पाद पादप प्रति वंदू ॥
जै श्री नानक स्वतः प्रकाशी । ज्ञान घन श्री प्रभु सुख राशी ॥१७॥
वंदो बाल रूप श्री नानक । जिनि श्री नानक विखे न अनअक
तुम आनंद के अगर मुकंदा । सब जग बंद दुतीअ जग चंदा ॥१८॥
श्री नानक अबंर मनि आसूं । सब पुमान को देत प्रकासू ॥
नाम प्रभाव जानि बहुताहू । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
श्री प्रभ वाहगुरु को नामा । सब सिखनि दृढाइ सुख धामा ॥१९॥
अम्ब्र पुख करं का हम हो अलि । अचला परि प्रताप जिन नृमल ॥
बंक्राकृत मै अति हो मानी । भूतद्रां मै मति अकुलानी ॥२०॥
श्री नानक प्रभु दीन दयाला । वंदौ आश्रय तेज मराला ॥
जतु वेद सम काय प्रकासू करुणासिंधु वपुश है जासू ॥२१॥

दो०- कामानुज द्रुप पंचशर बहुतं श्री खण्डेउ ।
दास दास को दासरो श्री नानक करि लेहु ॥२२॥
सदा वंदते निगम तुम श्री नानक करतार ।
वणितो मै तुवं जस रहे घन रस सुत पापार ॥२३॥

सो०- रदन छंद गुणगाइ श्रीप्रभ आत्माराम के ।
किलक ऊख हो जाइ जिनी नाम लिखतं तबे ॥२४॥
श्री अंगद करतार तुंड मारितंड प्रबल ।
दया दीन परि धारि मैं पुखप तनय चरण ॥२५॥
श्री नानक प्रभु के सिख वंदौ । श्री अंगद प्रभु विघ्न निकंदौ ॥
श्री अंगद प्रभु पद पद्म धियावहु जासु निपाकु सुरसरी पावौ ॥२६॥
तुंडं सोमधर के समान जनु । नाथ प्रभा जनु उर्दित उड़गन ॥
तुम प्रभु दीन दयान कृपा रे । श्री अंगद तुवं सद सद वारे ॥२७॥

दो०- श्री अंगद मम दीन परि कृपा करो दे दान ।
कविता करि जानौं नहीं मैं बालक अनजान ॥२८॥

स०- श्री प्रभु अमरदास दिवाकर आश्रय है मनो इंदु समाना ।
जासु सिरोरुह हंस प्रकाशक भाअति अतं अहै अभिरामा ॥
किंकर को प्रभु आयुस देहु करौं कविता अतिही विधि नाना ।

श्री गुरदेव करौं जसु उत्तम लीला मनौ प्रभ आत्मारामा ॥२९॥

सो०- अमरदास आधार त्वं प्रभु हो उगम मम ।
लाख बार जाऊं वार ससि गोती पदजं त्वं ॥३०॥

दो०- रामदास सुख रासि प्रभु अभिवंदन प्रणाम ।
ज्ञान दीप सुत डारि दृग दिखला कंरि अभिराम ॥३१॥

सो०- वदौं अबुंज बइ प्रभु रामदासं गुरं ।
दासनि करत सहाय ऐस गुरु तारनतरन ॥३२॥

छं०- गुरं अरजनं दूख भंजन मुरारि ।
प्रथम प्रणवंत जो पुभानं अधीन आधार ॥
परमं प्रसिद्धि पूरण पुभानं । परमं पवित्र तारण पखानं ॥
त्वयं गुण ऊच अम्बर समानं । मम अल्प बुद्धि बालक अजानं ॥
किंवि सकौ वरणि तुमहारे प्रभाव । तव परा शरणि तजि सब उपाय ॥३३॥

दो०- श्री हरि गोविंद नंदन वंदत हौं जुग पाय ।
कृपा करो प्रभु आपनी होवहुं शिशुहि सहाय ॥३४॥

चौ०- नमो नमो श्री अर्जन नंदन । जासु अनाम यते भवखंडन ॥
महाराज राजनि के राजा । श्री हरि गोविंद दीन निवाजा ॥३५॥
मो मतिमद तो शरणागत । करुणा करि दीजे विद्यामति ॥
बनक बक्र तुव अति अभिरामं । श्री प्रभु हरि गोविंद सधाम ॥३६॥

सो०- नाइ धियाइ अघ जाइ श्री प्रभु श्री हरिराय के ।
दिन मणि में सम गाइ आनन भा श्री सतिगुरु ॥३७॥

दो०- दासनि के दुख काटि प्रभु श्रीहरि कृष्ण दयाल ।
सीतल हृदय वसो सदा विधु सत वदन विशाल ॥३८॥
जपि श्री तेगबहादुरे पदजं जलज समान ।
ज्ञान काजरं सीतलं आश्रय भा तम हान ॥३९॥

चौ०- श्री गुर तेग बहादुर कादुर । धर्म पुंज गुरु जपि हो सादुर ॥
बर कीरति है श्री गुर जोना । दाहत दाहअ नामय भौना ॥४०॥

दो०- पद कुसेयंसं एस जनु चंचरीट लोभात ।
श्री गुर तेग बहादुर निथाइ ध्याइ अध जात ॥४१॥
श्री हरि गोविंद नंदन तिह नंदन अभिराम ।
बंदौ गोविंद सिंह गुर सब सिखनि सुख धाम ॥४२॥

चौ०- श्री गोविंद सिंह पदं अरिविंद । सीतल हृदय वसत रैनंदं ॥
अलक हाथ पंकज तुम धारो श्री गोविंद सिंह अपर अपारो ॥४३॥
श्री सतिगुर बर दीन दयाला । अम्बुक गोविंद सिंह मराला ॥
वाहिगुरू सुमरिहुं सतिनामू । जस प्रगट श्री आत्मारामू ॥४४॥

दो०- इति श्री गुर अष्टक सुभर जस श्री आतमराम ॥
प्रथम प्रभाव समापतं पढ़ि पावै विश्राम ॥४५॥

अध्याय ब्रियों

दो०- सुन्दर श्री गुर की कथा गुण मन्दिर सुख कंद ।
वरिणन तिसको अब करौ होवहिं विघ्न निकंद ॥९॥

श्री सतिगुर देव जी मधुर कथा परम सुन्दरु सभिनी
गुणनि जो मन्दिरु ऐं सुखनि जो बादलु आहे । उहा मधुर कथा
हाणे वरिणनु थो करियां । परम कृपालु प्रभू सभु विघ्न निवारणु
कंदो ।

दो०- श्री गुर अष्टक मैं कहूं श्री प्रभु आत्माराम ।
श्री प्रभु मुझको देहु वर ज्ञानदास सुख धाम ॥१॥

हे परम कृपालु प्रभु श्री गुर ज्ञान दास जूं ! मूं खे कृपा करे इहो
वरदानु दियो त मां प्यारे प्रभु श्री आत्माराम साहिब जो
सुजसु श्री गुर अष्टक में वरिणनु करियां ।

सो०- श्री प्रभु आत्माराम लीला से अनजान हूं ।
मैं बालक अनजान कृपा करो श्री सतिगुरू ॥३॥

हे श्री सतिगुरू देव मां अणजाणु बालकु श्री प्रभु आत्माराम साहिब
जी लीला खां अण वाकुफु आहियां, कृपा करे मूं खे उन
पावन लीला जी सोझी बखिशो ।

चौ०- मम उद्वेग भयो सु जहाजू । श्री गुर जस अथाह घनराजू ॥
करही करणहार गुर करुणा । इस उद्वेग में कठिनु जु तरना ॥

हे प्रभू ! मुंहिजो श्री गुरू लीला कथन करण जो संकल्प जहाजु आहे, श्री गुरदेव जो जसु अथाह समुद्र आहे, सो हिन संकल्पु रूप जहाज सां कींअ तरी सधिबो । सतिगुर देव जी कृपा सचो मल्लाहु थी मुंहिजे मनोरथ रूप जहाज खे पारि पुजाईदी ।

चौ०- तुम्हारो बृदु निबाहों लाजा । करहुं गृंथ पूरणु शुभ काजा ॥४॥

हे कृपाल प्रभु तवहां पंहिजे बृद् जी लजिड़ी निबाहियो जींअ हिन

चौ०- गृंथ जो शुभ कारिजु निर्विघ्न सम्पन थिये ।

नगर सु हेद्राबादि जो कहहीं । संगतिराम नाम प्रभ रहहीं ॥

दीन बंधु श्री संगतिरामा । तेंहि तनय उपजो अभिरामा ॥

श्री प्रभ संगतिराम अथाहे । अम्बरमणि कुल में प्रगटाहे ॥

तीनों लोक भयो प्रकाशा । जब श्री गुर भव लीन हुलासा ॥५॥

सिंधु देस जे सुंदर नगर हेद्राबादि में महाभाग्यशाली दीनबंधु श्री संगति राम साहिब जे घर में श्री स्वामी आत्माराम साहिब पुत्र रत्न जे रूप में प्रगटु थिया । श्री संगतिराम साहिब जो कुलु आकाश समान आहे, उन में श्री स्वामी आत्माराम साहिब प्रगटु थिया । जिनि जे प्रगटु थियण सां टिन्हीं लोकनि में प्रकाशु थी वियो ।

सो०- जै जै करि अहिलाद, रवि सम श्री गुर जन्म लिया ।

पाद सरोरुह आदि, श्री प्रभ तेज दिवाकरं ॥६॥

जदहीं सूरिज समान श्री गुरदेव जन्मु वरितो तदहीं जेदाहुं तेदाहं जै जै कार जो मधुर आवाजु छांइजी वियो, सभेई मनुष्य प्रसन्नता में गदि गदि थी वियां । जंहि प्यारे श्री गुरदेव जे चरण कमल खां वठी मस्तक ताई सभिनी अंगनि में सूरज जे समान तेज छांयलु आहे ।

सो०- प्रभ जी संगतिराम, सविता कुल प्रगटु कियो ।

कीओ सृष्टि को काम, दर्शन करि अघ नष्ट भये ॥७॥

महा भाग्यशाली प्रभु संगतिराम जे कुल में सरज रूपु स्वामी आत्मारामु प्रगटु थियो । जिनि जे प्रगट थियण सां सारे संसार जा कारिज सिद्धि थिया ऐं दर्शनु करण सां सभेई पाप

नाशु थी विया ।

दो०-जगत उधारण कारणे जनु प्रगटियो समरारि ।

सोम पिता धी पति प्रगट जनु जनेश अवितार ॥८॥

जणु जगत जे उधार करण वास्ते कामदेव जो वेरी शंकरु
भगुवानु प्रगटु थियो आ । यां चंद्रमा जे पिता समुद्र जी कन्या
श्री लक्ष्मी देवी अ जे पति श्री विष्णु भगुवान जो अवितार थियो
आहे । यां सृष्टि जी रचना करण वारो श्री बृह्मा ही पाण पधारियो
आहे ।

चो०-

मारतंड सम तुण्ड प्रकाशा । को पुमान सहि सक न अभासा ॥
श्रीगुरु को मनु विरक्त सदहीं । जगत फास में फसत न कदहीं ॥
बालक चरित्र अदिभुत कीन्हें । मात पिता को सुख बहु दीन्हें ॥
मैं बालक बड़ हूं अनजाना । जस न जानि श्री आत्मारामा ॥९॥

श्री स्वामी आत्माराम साहिब जे मुख जो प्रकाशु सूरज जे
समान आहे । कोई पुरुषु संदनि तेजु न थो सहारे सघे बचपन
खां हीं गुरदेव जो मनु वैरागी आहे । कहि बि संसार जी फासी
अ में कदहीं बि न फाथा । विचित्र विचित्र बाल लीलाऊं करे
माता पिता खे झझो सुख दिनाऊं । मां बालकु वदो अणजाणु
आहियां, जो स्वामी आत्माराम साहिब जो पूरो जसु नथो ज़ाणा ।

चो०- तंहि जावें जंह होवे इच्छा । श्री प्रभु आत्माराम स्वच्छा ॥
पादो जिनि तीरथ परसे । कल मल दाह होइ जेहि दरसे ॥१०॥

श्री प्रभु आत्माराम जिनि ईश्वर जे समान स्वतंत्र इच्छा
वारा आहिनि । पंहिजी मौज सां जेदाहुं बि इच्छा थिएनि तेदाहुं
वजनि था । पंहिजे चरण गुलिड़नि सां पंधिड़ो करे सभिनी
तीर्थनि जो दर्शनु कयाऊं । जिनि चरण कमलनि जे दर्शन सां
कलियुग जूं सभु मलीनताऊं भस्मु थी थियूं वजनि ।

चो०- पंचबीस जब बीते घरसे । आके एक गांव में प्रविसे ॥
काय प्रकाश मनो है मैना । अम्बुक दुति जानुव पति रैना ॥११॥

जदहीं स्वामी जिनि पंजवीहें वरिहें जा थिया तदहीं अचानक
हिकिड़े गांव मंझि प्रवेशु कयाऊं । संदनि शरीरु कामदेव जे

समान सुन्दरु आहे ऐं मुखिड़े जी जोति जणु राति जे पति
चन्द्रमा जे समान उज्ज्वलु आहे ।

चो०- गंधसार सम श्री गुर बानी । जोऊ प्रगट है जगत महानी ॥
अहिपति के सम जग को जीवनु । सब विद्या की कीन्ही सीवन
॥१२॥

परम कृपालु श्री गुर देव जी वाणी चन्दन जे समान ठंढिड़ी
आहे जा संसार में वदी महिमा सां जाहिरु आहे । सूरज जे समान
सारे जग जो जीवनु आहे । स्वामीजनि सभिनी विद्याउनि में पारदरिशी
थिया ।

छं०- श्री गुर आतमराम दिवाकर जैस प्रकाशा ।
जिस सम्वत् में आइ ग्राम में कियो निवासा ॥
सम्वत् विक्रम नृपति इन्दु सिधि गृह पांडव पुनि ।
आइ मीरपुरि मांहि जोग की लाई वरधुनि ॥
चरण कमल वंदौ प्रभु श्री आतम राम के ।
दास सीतल बखिशियो लजा अपने नाम के ॥१३॥

सूरज जे समान प्रकाशमान स्वामीजनि जंहि सम्वत् में
उन्हीअ ग्राम में निवासं कयो उहो सम्वतु विक्रमी १८६५ हुआ ।
श्री मीरपुर गाठ में अची हिक सुन्दर थलिहिड़े ते जोग जी धूणी
लगाई । गुरुदेव श्री आत्माराम जे चरण कमलनि खे मां प्यार
सां प्रणामु थो करयां । जिनि पंहिजे नाम जी लाजड़ी रखी,
मां दास गरीबि श्रीखण्डि ते अनूपम बखिशीश कई ।

दो०- ऐसा तेज प्रकाश किय काम्पत है पुरि तीन ।
दुष्टों को प्रभु दूरि किय दासनि को सुख दीन ॥१४॥

महान तेजस्वी श्री स्वामी जनि अहिड़ो त तेज जो विस्तारु
कयो जो टेई लोक कंबण लगा । सभिनी दुष्टनि खे भउ देई
परे करे दासनि खे सुख दिनाऊं ।

दो०- बसय तलप पै सिंह सम गिरा भनत जनु कीर ।
मृदुल उसैसी पीठ दे धैसे मान गम्भीर ॥१५॥

सुंदरु सेजा ते शींह वांगुर वेठा हुआ तोते वांगुरु मधुर

वाणी था बोलनि । कोमल कपह जे तूल ते टेकिड़ी देई गम्भीर
शान मान सां बिराजिमानु आहिनि ।

चौ०- सिंधु देश एक ग्राम वसाई । नामु मीरपुर अति शुभ जाही ।
तिस में अपन स्थान वसायूं । धर्मसाल श्री नानक शाहू ॥१६॥

सिंधु देश में मीरपुरि नाले हिकिड़ो अति शुभ गामु आहे ।
श्री गुरदेव तंहि में पंहिजो स्थानु वसायो, सतिगुर नानक शाह
वांगुरु उते सतिसंग जी धरमसाल रचियाऊं ।

चौ०- लोक आइके दर्शन करहीं । तेजु न सहि सकि ते अति डरहीं ।
गिरा प्रकाश ऐश जिनि करियो । सिंधु देश में शोरु जु परियो ॥१७॥

परियां परियां लोक अची दर्शनु पिया करनि पर श्री गुरदेव
जो तेजु न पिया सही सघनि । भय ऐं अदब में भरिजी वजनि ।
गुरदेव वाणी अ जो अहिड़ो त प्रकाशु कयो जो सजे सिंधु देश
में संदनि कीरति गाइजण लगी ।

चौ०- दीनों पर दयाल श्री गुर अति । अति कृपाल निद्रोह रहतिचित ।
कृपा सिंधु श्री आतिम रामूं । भव तरि जाइ रटत जिनि नामू ॥१८॥

महिरबान सतिगुर स्वामी आत्माराम साहिब दीन दुखियुनि
ते घणे खां घणी दया करनि था । चितु कदहीं बि कहिंजो अहितु
न थो चाहे । सभिनी जीवनि जे मथां बिना कारण ही कृपालु
आहिनि । साक्षात कृपा जे समुद्र स्वामी जनि जे मधुर नाम जपण
सां कई जीव संसार समुद्र खां पारि थी विया ।

चौ०- सिमर लोभ मोहादिक अनमख । नाहि जाहि सांयेक अनमख ।
क्या करिलें मैं अधिक बढ़ाई । मैं शिशु हूं अनजान गुसाई ॥१९॥

जंहि कृपाल गुरदेव काम क्रोध लोभ मोह खे कदहीं बि
वेझो अचणु न दिनो उन्हीय साहिब जी मां केतिरी वढ़ाई चई
सघंदुसि । ओ मुंहिजा वेद वाणी जा मालिक गुरदेव ! मां तवहां
जो अणजाणु बचो आहियां ।

सो०- प्रभु जू दीन दयाल, बाल युवा अरु विरिद्ध में ।
कृपा रूप गुण आल, जती रहियो कायक सदां ॥२०॥

कृपालु स्वामी जनि पंहिजे जीवन में बाल अवस्था, जुवानी
ऐं बुढिड़ाइप में भी दीन दयालता जे बृद खे कीन छदियो । प्रभू
अ वांगुरु सदां कृपा रूपु गुणनि जा घर आहिनि । शरीर करे भी
अठनि प्रकारनि जे कामादि दोशनि खां मथे रही पंहिजो जतीपणो
पूर्ण रूप सां निभायाऊं ।

**दो०- आनन जासु विभासु कर अलक सरोरुह मराल ।
जातु वेद सम काय जिन्हि श्री गुर दीन दयाल ॥२१॥**

दीन बंधु श्री गुर देव जो मुखिड़ो सूरज जे समान तेजवंत
आहे । मस्तक जा वार हंसनि जे समान उज्वलु आहिनि ।
अगिनी अ जे समान अंगनि जी लालु लालु कान्ति आहे । अहिड़े
सतिगुर देव जी सदा जै हुजे ।

**छं०- कामानुज कंदर्प बल लोभं मदो मोहादि जूं ।
सकल परिहरे श्री गुर हरी रूपं सकल आबादि जूं ।
सुखमा जू आश्रय की मनो रैनंद अम्बर शादि जूं ।
सीतलहृदय वसु श्री गुरु दे नाम आपन प्रसाद जूं ॥२२॥**

काम क्रोध लोभ मोह आदि सभिनी विकारनि जो भगुवंत
रूप श्री गुरदेव परित्यागु कयो । इन्हीअ करे संदनि शोभा बि
अपारु आहे । सुखमा बि जिनि जे चरणनि जो आसिरो वरितो
आहे । जलु पृथ्वी आकाश खे गुलिज़ार करण में चन्द्रमा वति
आहिनि । हे महिरबान श्री गुरदेव जू ! मां बालक गरीब श्रीखण्डि
जे हृदय में सदां निवासु कयो ऐं पंहिजे कृपा प्रसाद सां मधुर
नाम जी बखिशीश दियो ।

**सो०- हरीरूप गुर दयाल, दासनि के सुख कारण को ।
जनुमयंक उदमाल, सीतल हृदय वसो सदां ॥२३॥**

दया जा धाम श्री गुर देव साक्षात भगुवंत सरूप आहिनि
सदा दासनि खे सुखी करण जो जिमि जो दृढु विरितु आहे ।
दासनि रूपु तारनि जे विच में जेके चन्द्रमा वति सूंही रहिया
आहिनि, उहे कृपाल श्री गुरदेव मां गरीबि श्रीखण्डि जे हृदय
मन्दिर में सदां निवासु करनि था ।

दो०- ज्ञान सिखी नागं दृगं दास सीतलंपाइ ।

तुम्हरे जस वरिणनि करो जस विधु श्री गुर राय ॥२४॥

हे जस जा चन्द्रमा मुंहिजा राजा श्री गुरदेव ! कृपा करे दास गरीबि
श्री खण्डि जे नेत्रनि में ज्ञान जो सुन्दरु सुरिमो पायो त तवहां जो नृमल्
जसु वरिणनु करियां ।

चौ०- जामं जामिनी जागन नेमा । आतमराम खानि है छेमा ।

दीन दयाल श्री आत्मारामू । करुणा सिधुं द्रिड़ावे नामू ॥२५॥

सुखनि जी खाणि स्वामी आत्माराम साहिब जिनिजो इहोई नितु नेमु
आहे जो पहिरु राति जो पयो हुजे त निंड खे मोकल देई जागनि था ।
उन्हीय समय दीन दयाल प्रभु पंहिजे आत्मा में आरामी थी करुणा जे
सागर प्रभू श्री रामचन्द्र जे मधुर नाम खे पंहिजे हृदय में दृढु कनि था ।

चौ०- मस्ते की अस द्रुति है जाहीं मानो कोट सूर परिछांई ।

नेत्र विशाल अम्बुज सुन्दर । काय प्रकाश सुमेरे भूधर ॥२६॥

भुज सुंदर अति बचहि करालं । छबि लिलार जनु उदित मरालं ।

जेहि हेरहि करुणा की खाना । जन्म मरण तंहि उनको हाना ॥२७॥

किरोड़ सूर्य जे समान जिनि जे मस्तक जी चमक आहे ।

सुन्दर कमल जे समान जिनि जा नेत्र विशाल आहिनि । सुमेर परिवत जे
समान जिनि जे शरीर जो प्रकाशु आहे । जिनि जूं सुंदर भुजाऊं अत्यंत
बल शाली आहे । लिलाट जी शोभा जणु बालु सूरजु उदय थियो आहे ।
उहे कृपा जी खाणि श्री गुरदेव जंहि दाहुं हिक वारि बि निहारीनि था त
उन जो उन्हीय क्षण जन्मु मरणु मिटी थो वजे ।

सो०- श्री गुर कथा अनंत आइ अनंत जो कथन करि ।

तउ भी रटे बेअंत जस श्री आत्मराम का ॥२८॥

श्री गुरदेव जी कथा बेअंतु आहे । पाण शेषु भगवानु भी अची
वरिणनु करे त थकिजी करे स्वामी आत्मराम जे जस खे बेअंतु चई चुप
थी वेंदो ।

दो०- इति श्री गुर अष्टक शुभं भयो दूसरो ध्यायु ।

पढ़े सुने भव होइ तिंह भव भय तेहि मिटि जाय ॥२९॥

श्री गुर अष्टक जो बियों अध्यायु पूरण थियो । जेको हिन अध्याय
खे प्रेम सां पढ़ंदो ऐं सिक सां बुधंदो उन जो सदा कुशलु कल्याणु थींदो
ऐं संसार जो भउ मिटी वेंदो ।

अध्याय द्वितीय

सो०- बंदौ गिरिजानंद, जासु भजन कारिज सुफल,
कथा जु आनंद कंद, वरिणौ लीला अति सुभर ॥१॥

कृपानिधान साहिब मिठिड़ा श्री गणेश भगुवान खे मनाइनि था त श्री गिरिजा नन्दन खे वंदना था करियूं जंहि जे भजन सां सभेई कारिज सफलु था थियनि । पवित्र लीला वारे आनंद कंद सतिगुरु देव जी मधुर कथा वरिणनु था कयूं ।

दो०- कोट विनायक जो लिखहिं महि से कागज कोट ।
तो श्री आत्माराम के गुणहिं न आवहिं तोट ॥२॥

किरोड़ गणेश देव पृथ्वी जेदनि किरोड़ कागजनि ते
श्री स्वामी आत्माराम साहिब जे अथाह गुणनि खे विस्तार सां
लिखनि तदहीं बि गुणनि जी इति न थींदी ।

क०- वदौ श्री वाक वाणी, देहि गिरिजाराणी,
आनंद के दानी ऐसी जग अंबा ध्याइये
नमो अंब्र श्री भवानी, निगमों की मानी मातु,
जग की धयाणी वर चण्डका सुगाइये ।
ऐल के समान ईछन, मानो भान छबि ऐन के,
हिगन मात ऐसे वर दाइये ।
श्री गुर प्रभु आत्माराम जसहिं करो महान,
देवो मातु वरदान माथ हाथ लाइयें ॥३॥

श्री सरस्वती अमड़ि खे वन्दना था करियूं । हे श्री गिरिजा अमां !
असां खे कृपा करे इहो दानु दियो । हे माता ! तूं आनंद जी दातारि
आहीं । हे जगदम्बा ! असीं तुंहिजो ध्यानु थो करियूं । श्री पारवती
अमड़ि तवहां जे चरण कमलनि खे नमस्कारु था करियूं जिनि खे वेद भी
परम पूजनीय था चवनि । उन्हीअ जगत जी मालिकियाणी, सृष्टि चण्डका
देवी अ जी स्तुति था गायूं । मृग जे समान सुंदर नेत्रनि वारी, सूरज जे
समान सुन्दर शोभा वारी समस्त पापनि खे नष्ट करण वारी, कृपालु
वरदायनी माता जी जै जै था मनायूं ।

हे मिठी माता ! असां जे मस्तक ते हथिड़ो रखी इहा मिठिड़ो वरदानु दियो त श्री स्वामी आत्माराम साहिबनि जे महिमाशाली सुजस खे वधायूं ।

दो०- श्री नानक सुख सिंधु को पाणि जोड़ि प्रणामु ।

जिस करुणा कृपा ते, सीतलपावहि बुद्धि अभिरामु ॥४॥

सर्व सुखनि जे समुद्र सतिगुर नानक देव खे हथिड़ा जोड़े वार वार प्रणामु थो करियां, जिनि जे कृपा प्रसाद सां मां बालकु गरीबि श्रखण्डु श्रेष्ठ बुद्धि पाईदुसि ।

दो०- श्री गुर आत्माराम प्रभु लीला अमित अपार ।

पाणी परि पाथर तरे जांके नाम आधार ॥५॥

श्री गुरदेव स्वामी आत्माराम साहिबनि जी लीला अदिभुत अण गणी ऐं बेअन्तु आहे । उन्हनि जे नाम जे आधार सां पथर बि पाणी अ ते तरिया आहिनि ।

दो०- श्री गुर अति पुण्य जसं सब नंहि कहहुं विरिततं ।

सहस्र वदन करि गने गन तदपि न पावे अंत ॥६॥

श्री गुर देव जो जसु अत्यंत पवित्र ऐं विशालु आहे । मां उहो सभोई विस्तार सां गाइण में असमर्थ आहियां, छो त हजार मुखनि वारो श्री शेषु नागु भी मुंहिजे सतिगुर देव जे गुण गणण ते विहे त पारु न पाए सघंदो ।

दो०- मैं पदांत नंहि करि सकौं एक गिरा गुर पार ।

सीतलंपर प्रभु की महिर जो दासनि रखवार ॥७॥

अहिड़े महिमा शाली सतिगुर देव जे जस जो मां हिकिड़ी जिभ सां कथनु करे कींअ पारु पाए सघंदुसि । मां गरीब श्री खण्ड ते दासनि रक्षक प्रभू अ जी महिरबानी आहे जो कुछु गाइण जो उत्साहु थियो अथमि ।

सो०-आनंद कंद मुकुंद पद श्री आत्माराम के ।

वंदौ सम अरिविंद अवरैं परि धरि सिर नमहु ॥८॥

स्वामी आत्माराम साहिबनि जा चरण गुलिड़नि समान आहिनि । आनंद जा बादल ऐं मुक्ति जा दातार आहिनि, उन्हनि खे मां वार वार

वन्दनु थो करियां ऐं उन्हनि चरण गुलिड़नि में मस्तकु रखी नमस्कारु थो करियां ।

सो०- लखि न सकहिं अनजान श्रीप्रभ आत्मराम को ।

श्री गुर सुरसरि मान सब को पुज करत है ॥९॥

संसार जा बेसमुझ जीव शोभा निधान स्वामी आत्माराम
साहिबनि खे न था सुजाणी सघनि, पर सतिगुर देव सदा श्री गंगा देवी
अ वांगे सभिनी खे पवित्र करण वारा आहिनि ।

सो०- श्री सूफी कुल सूर रहत समान स्वभाव में ।

सब के मन के मूरु श्री गुर आत्मराम जूं ॥१०॥

श्रेष्ठ सूफी कुल जो सुरिज स्वामी आत्माराम सर्वदा स्मानता वारे
मिटे स्वभाव में वरितनि था ऐं सभिनी जे मन जो जीवनु धनु आहिनि ।

सो०- बार बार बलिजाउं उत्पल सम श्री गुर दृगं ।

ऐस अनामय पाउं श्री गुर के वंदौ सुभर ॥११॥

मां वार वार बलिहारु थो वजां श्री गुर साहिब जे गुलिड़नि जहिड़नि
सुंदर ऐं कोमल नेत्रनि तो जे सदां कृपा अमृत सां भरियल आहिनि ।
कुशल कल्याण सरूपु श्री गुरदेव जे सुन्दर चरण कमलनि खे मां प्यार सां
वन्दनु थो करियां ।

चौ०- धरन शरीर एह है कारण । परम ईश्वरं जस विस्तारण ।

नमो नाथ करुणा निधि स्वामी । जाउं वारि प्रभ तुम्हरे नामी ॥१२॥

श्री स्वामीजनि परम कृपाल भगवंत जे जस विस्तार करण लाइ ई
पृथ्वी ते मनुष्य शरीरु धारे प्रगटु थिया आहिनि । हे करुणा निधान
स्वामी ! हे मुंहिजा मिठा मालिक ! मां तवहां खे पल पल नमस्कारु थो
करियां । शल तवहां जे मधुर नाम तां बलिहारु थिया । हे प्रभु ! तवहां
जी सदा सर्वदा जै हुजे ।

चौ०-सीतलपनंग पाद रज करिये । जस तुमार तब वरणि उचरिये ।

तुम्हरी लीला अगम अनंता । कथे अनंतु जू पाइ न अन्ता ॥१३॥

हे शील सिंधु साहिब ! मां ब्रान्हड़े गरीब श्री खण्ड खे पंहिजे चरण
कमलनि जी रज करियो । तदहीं तवहां जे निर्मल जस जो सुंदर अखरनि

में उचारु कंदुसि । हे प्रभु ! तवहां जी लीला अगमु ऐं अनंत आहे ।
अनंतु भगुवानु बि कथनु करे उन जो अंतु न लही सघंदो ।

चौ०- रावणारि श्री आतम रामे । रचंक तार तम्य नंहि तामे ।

मै शिशु हूं अनजानु गुसाई । तुम्हरे पद प्रभ हृदय वसाहीं ॥१४॥

रावण जे दुशिमन श्री रामचंद्र साई अ ऐं श्री स्वामी आत्माराम
साहिब में तिर मात्र बि भेदु न आहे । मां अणजाणु बालकु आहियां ।
मुंहिजा गुण निधान साई ! मुंहिजा प्यारा प्रभू ! तवहां जा चरण गुलिड़ा
सदां मुंहिजे हृदे में वसंदा रहनि ।

चौ०- तुमरी लीला मैं नंहि जानूं । जस वरिणत हूं बुद्धि प्रमाणू ।

रटे सदा श्री आत्मरामू । अबुंध सम जो सद विश्रामू ॥१५॥

हे कृपाल प्रभु ! मां तवहां जी पावनु लीला खे नथो जाणां । मूं
खे जेतिरी किंचित बुद्धि बखशीश कई अथव उन्हीय अनुसार ही तवहां
जो मधुरु जसु पंहिजी टुटल फुटल वाणी अ में वरिणनु थो करियां ।
तवहां जे मधुर नाम जो दींह राति जापु थो करियां जो सदां सुख जे
समुद्र में विश्रामु दियण वारो आहे ।

दो०- सृष्टि बुंध करि विधु करमु बिधु सम तुंड विशाल ।

अनंगादि अनुग हरो श्री आत्मराम कृपाल ॥१६॥

हे परम कृपाल प्रभु ! हे चन्द्रमा समान विशाल प्रकाशमान मुख वारा
स्वामी आत्माराम मूं दास जी बुद्धि खे परम श्रेष्ठ बणायो ऐं दास जा
कामादिक सभेई विकार मिटायो ।

सो०- प्रभ जू दीना नाथ अनुज नाथ मम माथ परि ।

कृपा दृष्टि के साथ हाथ धारि निज श्री गुरो ॥१७॥

हे दीननि अनाथनि जा प्रभू ! मूं बालक जा मिठा मालिक ! पंहिजी
परम पावन कृपा दृष्टि सां, हे अविद्या ऊंदहि मिटाइण वारा श्री गुरदेव !
पंहिजो कर कमलु मुंहिजे मस्तक ते धारणु कयो ।

क०- बैठत सैनिय परि प्रभ जूं विराजमान

तरुण प्रकाश प्रभु उदित दिनंद है ।

दासनि के सुख हेतु लिये अवतार केत

सबनि को सुख देत आनंद के कंद है ।

श्री गुर उजार श्री आत्माराम मुरारि

दीन दुखों के हरण हार दुखों के निकंद है ।

कसांरि सम प्रकाश मानो भानु उदितास

श्री गुर चरण आस सीतलविलंद है ॥१८॥

जंहि महल प्रभू सुन्दर सेजा ते बृजमानु था थियनि, उन्हीय महल स्वामी जनि जो प्रकाशु सूरज जे प्रकाश समान सारे अङ्ग खे उजारो थो करे छड़े । दासनि खे सुख दियण लाइ ई उन्हनि पृथ्वी अ ते अवतारु धारणु कयो आहे । आनंद जा भरिपूरु बादल श्री स्वामी जनि चन्द्रमा जे समान सभिनी जा सुखदाई आहिनि । ऊजलु जसवारा गुरुदेव स्वामी श्री आत्माराम मुरारी भगुवंतत वांगुरु दीननि जा दुख हरण वारा आहिनि । समूह द्रखनि खे नासु करण में समर्थ आहिनि । कंस जे दुशिमन श्री कृष्ण चन्द्र वांगुरु जिनि जो तेजु प्रकाशु आहे, मीरपुरि में जणु साक्षात् सूरजु ई उदय थियो आहे । मां बालक गरीबि श्रीखण्डि खे अहिड़े श्री गुरदेव जे चरण कमलनि जी घणी अभिलाषा आहे । अथवा इन्हनि चरण कमलनि जे आसिरे ते ई मां भाग्यवंतु थियो आहियां ।

दो०- श्री मुर आत्म राम प्रभु उपदेशत निज दास ।

हरण दुखन कर चरण धरि बहुरि करो प्रभ जास ॥१९॥

हे श्री गुरदेव स्वामी आत्माराम प्रभू ! पंहिजे दास खे कृपा करे उपदेशु दियो तवहां जे दुख हरण चरण कमलनि ते हथिड़ो रखी हे प्रभू ! मां तवहां जो जसु वरी वरी थो गायां ।

स०- आइ पुमान करे प्रभु दर्शन हेरति मूरति भावती जी की ।

बूझत बनै सदेह उठाइ सुने तत्काल गिरा मुख नीकी ।

हैं अवतार लखियो बहु लोकनि बहुत बढ़ी श्रद्धा शुद्धि ही की ।

बोलत बोल मनोज समान मनो सब मोहत धी नर ही की ॥२०॥

श्री स्वामी जनि जे दर्शन लाइ कई प्रेमी अचनि था, मन मोहिनी मूरति जो दर्शनु करे सुखी था थियनि जे के भी प्रश्न उहे पुछनि था त बिना देरि जे स्वामी जनि उन्हनि खे मधुर वाणी अ सां समुझाणी दियनि था । स्वामी आत्माराम साहिब ईश्वरु जो अवतारु आहिनि इहा ज्ञाण

घणनि मांणिहुनि खे पेई आहे । इन करे शुद्धि हृदय वारनि जी श्रद्धा दींहों दीहुं वधी रही आहे ।

कामदेव जे समान मोहींदड़ बोल था बोलिनि जिनि खे बुधी सभिनी जी मति मोहिजी थी पवे ।

दो०- इंदीवर सम जायज दास सिलमुख जानि ।

श्री प्रभ आत्माराम की निपुण मानते आनि ॥२१॥

श्री स्वामी जनि जा चरण कमल जे समान ऐं दास भंवरनि जे समान आहिनि । चतुर पुरुष भी स्वामी आत्माराम साहिबनि जी श्रद्धा सां शरणि गृहणु करनि था ।

क०- सिफति प्रकाश भार संगतिराम में कुमार जांकी छबि देखि नारि नर धी फिरत हैं ।

अनुकम्पा गेह सो सुलागो नेह तेहि सो जु बरसत हैं मेंह सो आधीनों को भरत हैं ।

पद मकरंद को दुरेफ दास चाहते सुसब को दरस दे सुफल करत हैं ।

श्री प्रभु आत्माराम जांकी छबि अभिराम जांको लेत नाम सब बंधन हरत हैं ॥२२॥

सुजस जे सूरज स्वामी आत्माराम जे बालक स्वामी आत्माराम साहिब जी शोभा निहारे स्त्री पुरुषनि जी मति संसार खां फिरी ईश्वर में थी लग्गे । कृपा जे घर स्वामी जनि में जिनि जो नेहु लग्गे से वदभागी आहिनि । स्वामी जनि सदां कृपा जो मीहु वसाए पंहिजे शरणि पियलनि जूं दिलियूं हरि रस सां भरीनि था । सभेई दास भं वरनि वांगुरु चरण कमल जे मकरंद खे चाहीनि था । स्वामी जनि भी सभिनी खे दर्शनु देई उन्हनि जूं सभु अभिलाषाऊं पूरणु करनि था । जिनि जी शोभा अत्यंतु सुन्दरु आहे, जिनि जे नाम जे प्रताप सां सभु बंधन कटिजी था वजनि, उन प्यारे स्वामी आत्माराम साहिब जी सदा जै हुजे ।

छ०- अनमख लाये शान्ति घन प्रभू जू आत्माराम दीन दयाला श्री सतिगुरु अति छबि है अभिराम ।

अति छबि है अभिराम कृपा सरिता पति जानो सिद्धि जाम सब समिज नाम हरि का मुख मानो ।

कृपा सिंधु करुणारलव सीतलपर जिनि की महर
ऐसे आत्माराम गुर ध्यावहु मन वच कर्म निकर ॥२३॥

स्वामी आत्माराम जिनि सदां शांति जा बादल सरूप ऐ सभ में
सुजान आहिनि । दीननि ते दया करण वारा, अत्यंत सुंदरु शोभा वारा
मुंहिजा प्यारा सतिगुर देव कृपा जा त ज़णु समुद्र आहिनि । अठई पहर
सभ कहि समय में प्रभू अ जो मधुरु नामु संदनि मुख में रमी रहियो
आहे । कृपा सिंधू, करुणा जा महा सागर मां गरीबि श्रीखण्ड ते जिनि
जी सदा महिर आहे, अहिड़े स्वामी आत्माराम गुरदेव खे मां मन करे,
वचन करे ऐं समूह कर्मनि करे दिलिसां ध्यायां थो ।

दो०- अम्बर मनि आभा प्रभू वकृत जिनहिं विशाल ।
रदन छंद तुव जस भणे सीतलतुम्हरा बाल ॥२४॥

हे सूरिज समान शोभा वारा ! विशाल कमल मुख वारा प्यारा प्रभू
मां तवहां जो बालकु गरीबि श्रीखण्ड चपिड़ा चोरे तवहां जो नितु जसु थो
गायां ।

सो०- कथा सुनो धरि भाउ सतिसंगति नितु प्रेमसों
पूरणु तीसर ध्याय श्री आत्माराम प्रभ कृपा ते ॥२५॥

हे प्यारी सतिसंगति ! तवहां श्रद्धा ऐं प्रेम सां हीअ अमृत रूप कथा
बुधो । स्वामी आत्माराम जनि जी कृपा सां हीउ टियों अध्यायु पूरण
थियो ।

अध्याय चोथों

दो०- श्री चण्डी खण्डन विघ्न दुष्टिनि हनत अखण्ड ।

जग बन्दन पद बन्दना जाके तेज प्रचण्ड ॥१॥

कृपा निधान साहिब मिठिड़ा फरिमाइनि था : असां दुर्गा महाराणी श्री चण्डी देवी अ जे चरण कमलनि में वन्दना था करियूं जा देवी सभिनी विघननि खे नासु करण में ऐं दुष्टनि खे विध्वंसु करण में समर्थ आहे । जंहि जो तेजु प्रतापु अखण्ड ऐं प्रचण्डु आहे, उन माता जे जग मंगल कारी चरण कमलनि खे वार वार नमस्कारु आहे ।

दो०- जगत वंद श्री ईश्वरी हम परि करुणा धारि ।

तों करहुं वरणनु लीला अमित यथा बुद्धि अनुसारि ॥२॥

हे जगत पूजनीय सर्व ईश्वरी अमां ! मूं ते पंहिजी कृपा दृष्टि धारणु करियो त श्री सतिगुर देव जी अणगणी लीला जो पंहिजे बुद्धि अनुसार वरिणनु करियां ।

दो०- वंदउ पद श्री गणपति विघ्न हरण वर दैन ।

हृदय हमारे वासु करि बुद्धि काजर दे नैन ॥३॥

विघ्न हरण ऐं वर दायक श्री गणेश भगुवान जे चरण कमलनि में वंदना था करयूं । हे प्रभू ! मुंहिजे नेत्रनि में ज्ञान जो अंजनु पायो ऐं सदां हृदय में वासु कयो त सदां श्री गुरदेव जो जसु गायूं ।

सो०- श्री सूफी कुल चंद श्री गुर आत्मराम प्रभू ।

हम अक करो बुलंद सुखद बूखतं गिरा करु ॥४॥

शोभायमान सूफी कुल जा चन्द्रमा प्रभू श्री स्वामी आत्मराम जू कृपा करे मुंहिजा सभु दुख नासु कयो, मुंहिजी वाणी अ खे सुन्दरु सुखदाई ऐं शोभायमान बणायो ।

छ०- भद्र करत सब दासनि के प्रभू महा कृपाला ।

छेम धाम श्री प्रभू दयाल जिनि बिरिधरु बाला ।

श्री गुर आत्मराम धिखण सभ दिखणं विशाला ।

आनंद कंद मुकंद जो सबनि परि है जु दयाला ।

दीनरु अनाथ पै जिनिदया श्री गुर आत्मराम प्रभू ।

सुभग काम करते प्रभु ऐसे सतिगुर को नमः ॥५॥

जे सदां दासनि जा कल्याण करनि था । जे महान कृपालु आहिनि ।
कल्याण जा घर प्रभू जिनि जी बुढिड़नि तोड़े बालनि ते सदाई दया आहे
। श्री गुरदेव स्वामी आत्माराम जू जिनि जी बुद्धि समुद्र जे समान अथाहु
आहे । आनंद जा बादल, मुक्ति दाता, दीन अनाथनि ते दया करण
वारनि प्रभू श्री आत्माराम जी सदा जै हुजे जेके सदाई कारिज संवारीनि
था ।

दो०- सृष्ट काय जिनि नृमली वदउं सतिगुरु राय,
हंस समान प्रकाशकं मैं किंकर सिर नाय ॥६॥

पंहिजे प्यारे सतिगुर राजा जे चरण कमलनि में मां वंदना थो करियां
जिनि जा नृमल शरीरु अत्यंत श्रेष्ठ आहे । सूरज समान प्रकाशवान श्री
गुरदेव खे मां सेवकु सिरु निवाए प्रणामु थो करियां ।

सो०- श्री गुर परम उदोत, दासनि पर कृपाल प्रभू ।
प्रभ के अग्रज जोति जीवा तक सम वरिणतम ॥७॥

परम उदार श्री गुरदेव दासनि जे मथां सदां कृपालु साई,
जिनि जे चरण कमलनि जे नखनि जी
जोति चंद्रमा जे समान प्रकाशमानु आहे

स०- श्री गुर आतम राम कृपा निधि बाणी कहे तो श्री खण्डि समानं ।
बान गुरु को समान कलानिधि चरणारिविंद गुरु के महानं ।
श्री करुणा निधि दीननि की सिद्धि तारण दासनि ऐस जहानं ।
ले अवतार मनो समरारि जो दीन दातार श्री आतम रामं ॥८॥

श्री गुरदेव स्वामी आत्माराम कृपा जी निधि आहिनि, जंहि महल
वाणी अ जो उचारु था करनि त हृदय खे चन्दन वांगे ठारीनि था ।
स्वामीजनि जो स्वभावु चन्द्रमा जे समान ठंढिड़ो आहे ऐं चरण गुलिड़ा
वदी महिमा जी निधी आहिनि । दीननि खे सिद्धिता दियण वारा ऐं
दासनि खे तारण में समर्थ आहिनि । जहान में संदनि जहिड़ो दयालु
ब्रियो को कोन आहे । जणु कामदेव जे दुशिमनु शंकर जो स्वामी श्री
आत्माराम दातार शिरोमणी अवतारु धारे आया आहिनि ।

दो०- श्री गुरु बुद्धि निकेत वर श्री सूफी कुल केतु ।

चरण शरणि प्रभ सीतलअघ हरणं सुख देत ॥९॥

सूफी कुल जा चन्द्रमां, अनंत विद्या जा धाम मुंहिजा प्यारा भी गुरदेव ! मां बालकु गरीबु श्री खण्डु तवहां जे चरण कमलनि जी शरणि आहियां, जिनि चरण कमलनि जे ध्यान करण सांणु सभेई पाप नासु था थियनि ऐं सभेई सुख प्राप्त था थियनि ।

क०- काजर चहत प्रभू सीतलजू ज्ञान रूप

श्री गुरु आत्माराम दीजियो कृपाल जू ।

मांहि दीजे बल प्रभु होवौं तेरे जस अलि

पंकज चरण धूरि होवौं श्री मराल जू ।

मस्तक पै कच जानौ सूर का प्रकाश मानौ

समस सुफेद जानौ चंद्रमा को आल जूं ।

कायक प्रकाश चित्र मानो है समीर मित्र

ऐसे प्रभु के चरित्र भनौं सु रसाल जू ॥१०॥

हे मुंहिजा परम कृपाल प्रभू स्वामी आत्माराम जू ! मां बालिड़ो गरीबु श्री खण्डु पवित्र ज्ञान रूप सुरिमो थो चाहियां सो मूं खे कृपा करे दियो । मूं खे उहो बलिड़ो दियो बाबा ! त तवहां जे सुजस सौरभ जो भंवरु थियां । तवहां जे चरण कमलनि जी धूड़ि थियां । मुंहिजा हंस सरूप सतिगुरु तवहां जे मस्तक जा सुन्दरु वार जणु सूरिज जूं क्रणाऊं आहिनि । तवहां जी सुन्दरु सफेद दाढ़ी जणु चन्द्रमा जो अङ्गु अर्थात् मधुर चांदनी आहे । शरीर जो सुन्दरु प्रकाशु जणु अग्नि जे समान लालु लालु आहे । अहिड़े कृपाल प्रभू अ जो मां रस भरियो चरित्रु वर्णन थो करियां ।

दो०- मानो भव भव लियो जग लोकनि के भव हेत

रूप मीन के तारि को जुगल हाथ वंदेत ॥११॥

मां शंकर सरूप थी गुरदेव जे चरण कमलनि में बई हथिड़ा जोड़े वंदनु थो करियां जंहि लोकनि जे कल्याण वास्ते संसार में जनमु वरितो आहे । उन कामदेव जे दुशिमन महादेव रूपु गुरदेव जी जै हुजे ।

सो०- श्री प्रभु आतमराम सभिनि हकीमों के सिरं ।
जो रोगी गुरधाम आवत अरु वंदत चरण ॥१२॥

क०- औषधि को देत प्रभू तनक में छूटि जात
दुआ और दवा दोनों श्री गुर कमात है ।
जलद समान प्रभु बरसत दास पर
ऐसो श्री दिवाकर में सम जिनि गात है ।
ऐसो श्री आतमराम जांको लेत नाम सब
भव तरि जात कुछ बेरि न लगात है ।
श्री गुर तडित पति सीतलपै बरसत
आश्रय अब जु सद मेंहि को दृशात है ॥१३॥

श्री स्वामी जनि सभिनी हकीमनि जा सिरताज आहिनि जेको भी
रोगी श्री गुरदेव घरि अचे थो ऐं चरण कमलनि में वंदना थो करे उनखे
कृपाल प्रभू दवा दियनि था त खिण में उन जो रोगु छुटी वजे थो । दवा
ऐं आशीश सां सभिनी जा दुख दूरि था करनि । बादल जे समान सदा
दासनि ते कृपा वर्षा करण वारे, सूरज जे समान दिव्य अंग कांति वारे,
श्री स्वामी आत्माराम साहिब जे नाम उचारण सां सभेई जीव संसार खां
बिना देरि पारि पवनि था । मां बालिड़े गरीबि श्री खण्ड ते दया दामिनी
अ जा वर अर्थात् कृपा जा बादल सदाई कृपा जी वर्षा करनि था ।
उन्हनि जो आसिरो मूं खे सदाई चन्द्रमां जे समान सुखदाई नज़रि थो
अचे ।

दो०-जलज पदज श्री गुर निमों अंग्र मकरंद सुहाइ ।
श्री गुर आत्माराम प्रभु चरण शरणि सीतलई ॥१४॥

श्री गुरदेव जे चरण कमलनि जे मोतियुनि जहिड़नि नख पंक्ति खे ऐं
सुखद मकरंद खे मां नमस्कारु थो करियां । स्वामी आत्माराम प्रभू पंहिजे
चरण कमलनि जे शरणि आयलनि खे सदा सुखड़ाई ठण्डक था बखिशीनि
।

चौ०- मै न मूरती को परिणामं, कृपा करो श्री आत्मरामं ।

दीन दयाल रमा पतिरूपा वारिधि सम अगाध जिन्ह ऊषा ॥१५॥

कामदेव जे समान सुन्दर सरूप वारे श्री गुरदेव खे मां
प्रणामु थो करियां । हे प्यारा स्वामी ! मूं ते कृपा करियो, तवहां
दीननि ते दया करण में श्री नारायणु सरूपु आहियो । तवहां जी
उपमा समुद्र जे समान अगाध आहे ।

चौ०- ऐसे कं निधि को मैं गाऊं । नहीं लहूं मैं अन्त कदाहूं ।

वारि जाऊं सद सद श्री गुर परि । कई भृत्य प्रभु तारे नर हरि
॥१६॥

अहिड़े जस जे समुंड श्री गुरदेव खे मां सनेह सां गायां थो कदहीं
बि उन्हनि जे जस जो अंतु न लही सघंदुसि । सौ सौ दफा सतिगुर तां
मां बलिहारु वजां जंहि मनुष्य रूप भगुवंत केतरनि सेवकनि खे संसार जे
सागर मां तारे पारि कयो आहे ।

चौ०- जिमि द्वितीया को वृधत चंदू । तिमि श्री आत्मराम रैनंदू ।

दिनत तेज जिन्ह कांति अनूपा । नृखत जो प्रभ सुन्दर रूपा ॥१७॥

जहिड़ी अ तरह बीज जो चन्द्रमा नितु पंहिजी कलाउनि खे वधाईदो
रहे थो, तियं स्वामीजनि भी दिव्य चन्द्रमा वांगुरु पंहिजे पवित्र ज्ञान जी
कलाउनि खे नित्य वधाईनि था । जिनि जे अंगनि जी अनूपम कांति
चौधारी चमिकी रही आहे । जिनि भी हिक वारि स्वामीजनि जे मोहक
सरूप जो दर्शनु कयो उहे पाण खे धन्यु था समुझनि ।

चौ०-

दर्शन कर जन अघ सब हरही । श्री गुर कथा विमल जस कहही ।

मुझ पर प्रभ अनुकंपा धारी । श्री प्रभ आत्मराम मुरारी ॥१८॥

उन्हनि जे दर्शन करण सां सभु पाप नासु थी था वजनि । उहे जिते
तिते श्री गुर देव जूं मिठिड़ियूं गाल्हिड़ियूं गाए सदा निर्मलु जसु था
उचारीनि । भगुवानु मुरारी अ सरूप प्रभु थी आत्माराम साहिबु मुंहिजे
मथां बि घणे खां घणी कृपा कई आहे ।

चौ०- अरुण चरण वर मृदुल सुहाए,

जस बिधु कत नयं दुति पावे ॥१९॥

लालु लालु चरण कमल अतियंत सुन्दर कोमल ऐं सुहावना आहिनि
जहिड़ी तरह टिड़ियलु गुलु मनु मोहींदो आहे ।

चौ०- भक्ति देन निज दासनि ऐयो । मारितुंड सूफी कुल भैयो ।

श्री गुर आतम राम स्वामी । तांका जस वरणौ अभिरामी ॥२०॥

पंहिजे दासनि खे भक्ति जो दानु दियण लाइ सूफी कुल में सूरज रूपु
थी प्यारा श्री गुर देव स्वामी आत्माराम जनि अहेतुकी कृपा करे लाट तां
लही आया । मां उन्हनि जो सुन्दरु जसु वर्णनु थो करियां ।

दो०- स्तुति उक्तहुं अनिक विधि जे पुमान है ग्राम ।

पावन परम पुरातनु श्री गुर आतमराम ॥२१॥

जेके भी मीरपुरि ग्राम जा रहवासी आहिनि से सभेई अनेक प्रकारनि
सां स्वामी जनि जी स्तुति करनि था । परम पवित्र पुरातनु पुरुष स्वामी
आत्माराम साहिब आहिनि अर्थात् सतियुग जा ही दिव्य पुरुष आहिनि ।

सो०- करुणा करि सुजनेश सीतलपर प्रभु श्रीगुरं ।

अवतरियो जनु शेष सर्व सृष्टि को तारने ॥२२॥

ब्रह्म सरूपु श्री गुरदेव जनि सम संतोष वैराग्य वीचार ऐं ज्ञान आदि
पुटिड़ा प्रगटु कया आहिनि, उहे मूं बालक श्री खण्ड ते कृपा दृष्टि रखंदा
। जेके सारी सृष्टि जे कल्याण करण लाइ शेष भगवान वांगे अवितरया
आहिनि । शेषु भगुवानु हजार ज़िभुनि सां नितु नेमु नामु उचारणु थो करे
तियें स्वामीजनि भी रोम रोम खे रसिना बणाए मधुर नाम जो उचारणु
करनि था, रगूं बि रांझन जूं नितु रामु रामु थियूं रटीनि ।

क०- सुन्दरु जु श्री मुख है मानो अरिविन्द दुति

श्री प्रभु आत्माराम दया के जु सिंधु हैं ।

शरदा रितु का सोम मानो उदतियो है आप

अंशु जोई तिसकी जु तीनो लोक वंद है ।

जाचक हूं प्रभु दान देवो श्री आतमराम

तुम्हरे चरणारिविंद सीतलमलिंद है ।

सूफी कुल के उज्यार संगतिराम के कुमार

तीनों अवतार भव दुख के निकंद है ॥२३॥

दया जे समुद्र स्वामी आत्माराम साहिब जो मुखिड़ो कमल जे समान
शोभनीय आहे, ज़णु शरद रितु जो चंद्रमा उदय थियो आहे । जंहिजी
हिक हिक कला टिनहीं लोकनि में वंदनीय आहे । हे प्यारा प्रभू श्री
आत्माराम साहिब ! मां तवहां खां इन्हीय दान जी भिक्षा थो घुरां त
तवहां जे चरण गुलिड़नि जो मां गरीबु श्री खण्डु भंवरो थियां । सूफी

कुल जो उज्यारो श्री संगति राम जो लाडुलो फरिजंदु जिनि संसार जे दुखनि मिटाइण लाइ पृथ्वीअ ते अवतार वरितो आहे, तंहिजी सदाई जै हुजे ।

सो०- बैसि तखत पर राज, मानो अहे पुरंदर
दर्शन सफले काज, दास भए बृशक सम ॥२४॥

जंहि महल स्वामी जनि सुन्दर संदल जे बृजमानु था थियनि त दासनि रूपु देवताउनि जे विच में सुरपति इन्द्र जे समान शोभनि था । जिनि जे दर्शन करण सां सभेई कारिज सफलु था थियनि ।

दो०- श्री गुर आतमराम प्रभु अलक प्रसून जू हाथ ।
वारि जाउं तव नाम पर प्रभु जू करो सनाथ ॥२५॥

हे मिठा मालिक स्वामी आत्माराम जू तवहां जे मस्तक ते सुन्दर गुलिड़नि जे समान अलकावली शोभे थी । मां तवहां जे मधुर नाम तां सदिके वजां । प्यारा प्रभु ! कृपा करे मूं खे सनाथु कयो (अथवा श्री इष्ट देव सां मिलायो)

चौ०- हस्त कमल प्रभ के बलहारी । ओ वज्र सम नख दुति भारी ।
सबल दंड इंव अती प्रचंडा । श्री गुर आतमराम अखण्डा ॥२६॥

अखण्ड आनंद बारे श्री स्वामी आत्माराम साहिब जे हथड़नि गुलनि तां मां बलिहारु वजां । जिनि जे नख पंकति जी शोभा मोतियुनि जे समान सुंदरु आहे । श्री गुर देव जूं सुन्दर भुजाऊं बल सां भरिपूरु ऐं हाथी अ जी सूंढि वांगे सुन्दरु आहिनि ।

चौ०- प्रभू कलेवर ऐस सु अजला । मानो कृष्णं सुत अति अनकुल ।
सम फल पिता जासु अरुणं दृग । बैस कलप परि तेजवान प्रभ ॥२७॥

स्वामीजनि जो शरीरु अहिड़ो त उज्वलु आहे जणु भगुवान जे पुट प्रदुमन (अर्थात कामदेव) जे समान अत्यंत मोहकु आहे । लाल कमल जे समान जिनिजा नेत्र विशाल ऐं आकर्षक आहिनि । उहो तेजवंतु प्रभु जंहि महल सेजा ते बृजमानु थियनि था त संदनि लाइ सभु महिमाऊं फिकियूं थियूं लगनि ।

चौ०- गिरा करत मृदु ऐसी श्री गुर । आमानीय जनु आए बपु धारि ।
जासु दरस महिषा धुज भाजे । अस श्री आतमराम बिराजे ॥२८॥

ऐं जंहि महल अमृत समान सुमधुर बोल बोलीनि था त
ओदी महल इयें थो नज़रि अचे त साक्षात वेदु भगुवानु सरूपु
धारे आयो आहे । जिनि जे दर्शन करण सां पादेजे धुजा वारो
यमराजु भी भजी थो वजे, अहिड़े स्वामी आत्माराम जी सदा जै हुजे ।
चौ०- वार वार कुरिबानी श्री गुर । प्रभ कुसे यसं हम अलि ऊपर ।
नासु मनोभवादि मम भये । दधि अगाध सम प्रभु करुणए ॥२९॥

प्यारे श्री गुरदेव तां मां वारे वारे बलहार थो वजां । श्री
गुरुदेवु कमलु आहे । मां संदनि कृपा मकिरंद जो पलियलु भवंरु आहियां
। अगाध समुद्र जे समान करुणा निधान श्री गुरदेव आहिनि जिनि जी
कृपा सां मुंहिजा काम आदि सभेई विकार नासु थी विया आहिनि ।

चौ०- अंध्र मकरंद प्रभु के जोई चंचरीट सम सीतलभयोई ।
श्री बाहज अज जलज समाना । श्री प्रभ आतम राम सुभाना ॥३०॥

श्री स्वामी जनि जे चरण कमलनि जे मकरंद जो मां बालकु गरीबु
श्री खण्डु भंवरो थियो आहियां । स्वामी आत्माराम साहिब सुन्दर सूरज
जे समान आहिनि, संदनि हथिड़नि गुलड़नि जा नख मोतियुनि समान
झलिकनि था ।

दो०- कृपा सागर गिरा जो, मनो सीप सुत पोइ ।
दशन पांति ओ बज्र सम, सीतलहृदय बसोइ ॥३१॥

कृपा सागर स्वामी जनि जे वाणी अ जो उचारु अहिड़ो सुंदरु ऐं
मधुरु आहे जणु मोती था पोइनि । सतिगुर जी दंदनि जी पंकति
मोतियुनि जे समान शल सदां गरीबि श्री खण्डि जे हृदय में वसंदी रहे ।

सो०- जस श्री आतमराम ओष्ट रदन अरु रसन से ।
गावो सद सिद्धि जाम कृतांत हाथ से छूटि हैं ॥३२॥

स्वामी श्री आत्माराम जो जसु चपनि दंदिड़नि ऐं जिभिड़ी अ सां
सदाई अठई पहर गानु थो करियां । जंहि जे प्रताप सां हे जीवु यमराज
जे चंगुल खां छुटी थो पवे ।

सवैया०- जलजात से है पद श्री प्रभ आतमराम दिनंद सुदास सहाई ।
दृग जे प्रभ के जलजं जनु जोत सुआश्रय जाति दिवाकर नाई ।
श्री प्रभ आतमराम सदां सुख धाम प्रभू चंचरीट लुभाई ।
दासनि के सुख को करता दुख को हरता मनो चंद्र कलाई ॥३३॥

श्री स्वामी जनि जा चरण जलजे ज़ावल कमल जे समान आहिनि ।
सदां दासनि सां सहायता कार, हृदय जी ऊंदहि मिटाइण में सूरज जे
समान आहिनि, स्वामी जनिजा नेत्र कमल हीरे जे समान चमिकनि था ऐं
सुंदर मुखिड़े जी जोति सूरज वांगुर आहे । सुखनि जा धाम स्वामी
आत्माराम साहिब मुंहिजो मनु भंवरु थी तवहां जे लोभिजी पियौ आहे ।
हे दासनि जे सुखनि जा करतार, दुखनि जे मिटाइण वारा, चन्द्रमा जे
कलाउनि वांगुरु भक्ति सुधा जी वर्षा करण वारा तवहां जी सदा जै हुजे ।
दो०- कमल वदन सुख सदन गुर करुणा मन पर लियाइ ।

सीतलके प्रभु भाल पर, कर धारो करुणाइ ॥३४॥

हे कमल जहिड़े मुखड़े वारा सुख सदन श्री गुरदेव पंहिजे मन में
करुणा कृपा खे धारणु करे, हे प्रभू ! मां गरीब श्री खण्ड जे मस्तक ते
घणी कृपा सां पंहिजो हस्त कमलु धारणु करियो ।

सो०- पूरणू भयो प्रभावु श्री सतिगुर की कृपा ते ।

मुक्ति दाइ इह धियाउ चतुर्थ भयो सम्पूर्णम् ॥३५॥

श्री सतिगुर देव जी परम अनुकम्पा सां हीउ भक्ति जो दानु द्रियण
वारो चोथों अध्यायु सम्पूर्ण थियो ।

अध्याय पंजों

दो०- श्री गिरिजा नंदन निमो जो सब निरजुवर राज ।

बहुड़ि वंदि गिरि धी पती सुफल होय सब काज ॥१॥

श्री पारवती नंदन गणेश भगुवान खे नमस्कारु था करियूं जो सभिनी देवताउनि जो राजा ऐं पूज्य आहे । वरी हिमालय नंदनी अ जे पती श्री शंकर भगुवान खे नमस्कारु था करियूं जिनिजे कृपा सां असांजा सभेई कारज सफलु थींदा ।

सो०- वंदउ शारद पाय हृदय वास करु सरस्वते ।

रही संबहिं जग छाड़, जांकी नयन कटाक्ष छबि ॥२॥

श्री शारदा अमड़ि जे चरणनि में नमस्कारु था करियूं जिनि जे कृपा कटाक्ष जी शोभा सारे संसार में झलिकी रही आहे । उहा श्री सरस्वती देवी असां जे हृदय में निवासु करे ।

छंद०- चपला पति वंदउ जोड़ि हाथा ।

निगमागम जासु वरणंत गाथा ॥

दया करि जगीशा श्री पद्मापती श्रीआतमराम जस दा गती ॥३॥

श्री लक्ष्मी नाथ प्रभू अ खे हथिड़ा जोड़े नमस्कारु था करियूं जिनि जी मधुर कथा वेद पुराण निरंतर वरिणनु था करनि । हे जगत जा ईश्वर श्री कमलाकंत प्रभू ! मूं ते दया कयो त स्वामी आत्माराम जे जस गान में मुंहिजी निर्विघन गती थिये ॥

छं०- नमो श्री मुरारी दया के जु सिंधो नमो नाथ पूरे सीतलभृत्य वंदे ।

प्रभू आतमरामं का पुत्र सुजासं, मां इन्द्रा पती हाथ वंदे सुदासं ॥४॥

दया जे समुंद्र मुरारी भगुवान खे नमस्कारु था करियूं, परीपूरणु प्रभु अ खे दासु गरीबु श्रीखण्डु वंदना थो करे । स्वामी आत्माराम साहिब जो पवित्रु सुन्दरु जसु थो गायां । ओ अमां लक्ष्मी अ जा मालिक ! मां तवहां जे कृपा भरियनि हथनि खे बि वन्दना थो करियां ।

दो०- श्री विष्णुं चरणांकंज सनिकादिक धरि ध्यानं ।

ऐस अंध्रह सीतलअली रुचि सों जोड़ूं पानं ॥५॥

श्री विष्णु भगवान जा चरण गुलिड़ा जिनि जो श्री सनकादिक रिशी भी ध्यानु था धारीनि उन्हनि चरण गुलिड़नि खे मां गरीबि श्रीखण्डि सहचरी प्यार सां हथिड़ा थी जोड़ियां ।

**सो०- श्री गुर आतमराम पापा रज दृग वंदिहों
सीतलकरत नमामि वरणों कथा सुधा धरं ॥६॥**

स्वामी आत्माराम साहिब जे कृपा दृष्टि भरियल नेत्र कमलनि खे नमस्कारु थो करियां । गरीबि श्री खण्डु वार वार नमस्कारु करे अमृत सां भरिपूरि कथा वरिणनु थो करियां ।

**क०- छटा जो आकाश की है, तैसा है प्रकाश प्रभू
चरणं इन्दीवर सीतल मधु बोर है ।**

श्री प्रभु आतमराम प्रतिनी महान अति
ज्ञान औ वैराग्य करि समरादि को गहैं ।
सीतल पै जीमूत की सम प्रभ दया धारी
बुद्धि देकी लाल आप जसु कीनो मोर हैं ।
बृह विदारादि विदारि दीनो प्रभू आप
शशि श्री आतमराम सीतल चकोर है ॥७॥

नृमल आकाश जे छटा जे समान जिनि जो नृमलु प्रकाशु आहे, जिनि जे चरण गुलिड़नि ते मां गरीबु श्रीखण्डि मस्तु भंवरु आहियां, श्री आत्माराम साहिब जनि जी ज्ञान ऐं वैराज्ञ जी विशाल सेना आहे जंहि सां काम आदिक विकारनि खे पकिड़े जीतिनि था, गरीब श्री खण्डि ते जिनि बादल जे समान दया धारणु करे, बुद्धि रूपु जलु देई मूं खे यशस्वी बणायो आहे, मुंहिजे काम विकार खे विध्वंसु कयो आहे, पाण प्रभूअ उन चन्द्रमा रूप स्वामी आत्माराम जो मां गरीबु श्रीखण्डु चकोरु आहियां ।

**दो०- कुशद चरण पर वंदना जो अभिमति दातारु ।
जातु बेद कामादि जो नासु होइ अहंकारु ॥८॥**

श्री गुर देव जा चरण कमल दासनि जा सभु मनोरथ पूरणु करण में समर्थु आहिनि, उन्हनि चरण कमलनि में मां वंदना थो करियां छो त उन्हनि काम रूप अग्निनी अ जो अहंकारु मिटाए छड़ियो आहे । उन कृपाल गुर देव जी सदां जै हुजे ।

दो०- श्री गुरु आतमराम प्रभु अम्बर मणि धरि ध्यानु ।

बंदि दोऊ कर वंदित सुन्दर दुति मद नान ॥९॥

सूरज समान स्वामी आत्माराम साहिब जो ध्यानु धारण करे ब्रह्म
हथिड़ा जोड़े वंदना थो करियां उन जी शोभा काम देव खे भी लजायमानु
करण वारी आहे ।

क०- श्री गुरु आतमराम मानो है दृषभान

अमल कमल जैसे चरणारिविंद हैं ।

पुख कर तनय कुशेयसहैं कच जांके

सुखमा निहारि प्रभु मोहत मलिंद हैं ।

पानों की प्रभा है ऐसी मानो राम रस हूं की

काय को प्रकाशु ऐसो कोट सूर्य मंद हैं ।

ऐसो श्री आतमराम दया दीन पर काम

सीतलसुवंदितहिं आनंद के कंद हैं ॥९०॥

स्वामी आत्माराम जनि जो दर्शनु सूरज जे समान सुखदाई आहे,
निर्मल कमल जहिड़ा जिनि जा चरणारिविंद जल जे पुट कमलनि जहिड़ा
कोमलु जिनि जा वार आहिनि, जिनि जी शोभा दिसी भवंरा बि मोहिजी
था पवनि, हथिड़नि जी झलक गुलिड़नि जहिड़ी आहे, शरीर जो प्रकाशु
दिसी किरोड़ सूरज भी लजी था थियनि, अहिड़ो स्वामी आत्माराम जिनि
जो दीननि ते दया करण जो ई धंधो आहे । उन आनंद जे बादल खे मां
गरीबु श्रीखण्डु वंदना थो करियां ।

दो०- मंगल सुख कल्याण दा करंहे अमंगल हानि ।

जपि श्री आतमराम को प्रगटे उर में ज्ञान ॥९१॥

मंगल, सुख ऐं कल्याण जो दातारु, अमंगलनि खे मिटाइण वारो
स्वामी आत्माराम साहिबु आहे, जिनि जे मधुर नाम जे जप करण सां हृदे
में ईश्वर जो ज्ञानु प्रगटु थो थिए ।

सो०- श्रीगुरु जस है अनन्त मैं न अंत पावौं कदे ।

श्री आतमराम बेअंत सीतलपै करुणा करो ॥९२॥

श्री सतिगुरु देव जो जसु अनन्तु आहे उन जो अंतु मां कदहीं बि
पाए न सघंदसि । ओ बेअंत बाबा स्वामी आत्माराम मां गरीब श्रीखण्ड
ते सदा कृपा दृष्टि करियो ।

दो०- श्रीगुर आतमराम प्रभ लीला अमित अपार ।

बंधन कंदन सुख सदप जासु चरित अगार ॥१३॥

परम कृपाल प्रभू स्वामीजनि जी लीला अणगणी ऐं बेअंतु आहे,
सभिनी बंधननि खे नासु करण वारो सुख जे घर में वसाइण वारो, जिनि
जो पावनु चरित्र भण्डारु आहे ।

चौ०- अस गुर कीरति कहों गिरंथू । सुनि सुख पांवहि गुर के पंथूं ।
गुर कीरति सरिता जिनि वरणी । कुंज करणी अभोम को हरणी ॥१४॥

हिन ग्रंथ में अहिड़े श्री गुरदेव जो नृमलु जसु गानु थो
करियां, जंहि खे बुधी श्री गुर जे भक्ति रस्ते ते हलण वारा घणो सुखी
थींदा । सतिगुर जी कीरति नदीअ वांगुरु वरिणनु थो करियां जा मंगलनि
जे करण वारी अमंगलनि खे मिटाइण वारी आहे ।

चौ०- श्री प्रभ आतमराम जु ईछनि । सविता कोटि प्रकाशत तीछन ।
चरण मनोहर वंदन करहूं । नाख प्रभा कहि भव सिंधु तरहूं ॥१५॥

स्वामी जनि जा सुन्दर नेत्र किरोड़ सूरज जे समान तेज प्रकाश वारा
आहिनि । स्वामी जनि जे मनोहर चरण कमलनि खे मां वंदनु थो
करियां, जिनि जे नख पंकति जी महिमा चई संसार समुद्र खां पारि
थींदुसि ।

चौ०- अमल कमल जुग लसत भला । नाख आवली हीरनि की कल ।
नभ में अंजनु उड़िगण पांता । चरण धनज पर नावत माथा ॥१६॥

सुकोमल लालु लालु गुलिड़नि जे जोड़े खां बि चरण कमल सुन्दरु
था लगनि । नख पंकति त जणु हीरनि जूं मनोहरी कणियूं आहिनि, जणु
आकाश मां तारनि जूं कतारूं लही अची चरण कमलनि ते मस्तक थियूं
निवांइनि ।

दो०- लीला वरणौ तासु इक जो इक दिन श्री कीन ।

बहुत न जानहुं बाल मैं हों तो बुद्धि विहीन ॥१७॥

हाणे पंहिजे महरबान श्री सतिगुर जी हिक लीला वरिणनु थो करियां,
जा सोभारी लीला हिक दींहुं श्री सतिगुर देव कई आहे । मां थोरिड़ी मति
वारो बालकु आहियां, मूं खे घणियुनि लीलाउनि जी ज्ञाण कान आहे ।

सो०- श्री गुर जस शुभ लाग जो हैं प्रेमी जन सुभर ।

पावन परम प्रयाग ऐसे चरितं कहत हूं ॥१८॥

श्री सतिगुर देव जो सुन्दरु जसु, सुन्दर मति वारनि प्रेमी जननि खे
प्यारो लगंदो आहे, जेको श्री प्रयागराज जे समान परम पवित्र आहे, उन
सुन्दर चरित्र खे मां हाणे गायां थो ।

सो०- वरणौ एक कथानि, प्रभू अनामय खान की ।

मैं बालक अनजान, सब लीला जानौ नहीं ॥१९॥

मंगलनि जी खाणि महिरबान प्रभू अणुजी हिक मधुर कथा वरिणनु
थो करियां । मां अणजाणु बालकु आहियां, प्रभू अ जे सभिनी लीलाउनि
जी मूं खे जाण न आहे ।

चौ०- एक समय श्री आतमरामू । दया दीन पर जिनि इह कामू ।

बैठे अपने खियाल अभिरामा । भक्त रूप श्री आतमरामा ॥२०॥

एक उद्वेगं उठियो जु मन ते । बड़े बड़े जो श्रेष्ठ जन थे ।

से सब गए आपने धामू । संगी जो हमरे अभिरामू ॥२१॥

श्रेष्ठ श्रेष्ठ जन सब चलि गए । अब नहि दिसत सृष्टि को भये ।

वैराग रूपु प्रभू वचन जु भने । अम्बुज अम्बुद से बच ठने ॥२२॥

दो०- तब श्लोक इक भनियो मुख श्री गुर आतमराम ।

जिंह अपरम्पर बानियं सरिता पति सम जान ॥२३॥

हिकिड़े समय दया मूरति श्री स्वामी आत्माराम साहिब, जिनि जी
दीन जननि जे मथां कृपा सदाई वर्षे थी, पंहिजे सुन्दर खियाल में वेठा
हुआ जणु साक्षात ज्ञान भक्ति जा अवतार बृजमानु आहिनि । उन्हीय
समय हिकिड़ो व्याकुलिता भरियो विचारु मन में उभिरी आयुनि हा प्रभू !
जेके श्रेष्ठ श्रेष्ठ पुरुष सज्जन सुहृद हुआ, जिनि जी मन भावनि संगति
हुई उहे सभेई पंहिजे धाम (अर्थाति प्यारे ईश्वर जे चरणनि में) वजी
पहुता आहिनि, हींअर शुभ मति वारा सुन्दर सजन पुरुष किथे भी नजरि
न था अचनि ।

इन्हीअ विचार में पंहिजे सुन्दर मुख कमल मां गंभीर वैराग्य सां
भरिपूरु वचन कथनु कया । उन्हीय समय सहजेई श्री मुख मां स्वामी
आत्माराम साहिब जनि हिकिड़ो सुन्दरु श्लोकु उचारणु कयो । उहा वाणी
वेद भगुवान वांगुरु पवित्र अपरोक्ष ऐं समुद्र वांगे गम्भीरु आहे ।

श्री मुख वाक श्लोक :

अहिड़ो पयो दुकारु जो चडा सभु चली विया ।
हुओ जिनि जे मुख में धर्म नियाय वीचारु ।
वेहनि विच संगति में सभा जा सींगार ।
सुजो सभु संसारु आतमराम उन्हनि रे ॥२४॥

चौ०- सुन्दर अरविंद मुख सोहे । श्री गुर सब जन का मन मोहे ।
इह श्लोक दुख दाहन कहियो । दासनि को सुखु बहुते दइयो ॥२५॥

सुन्दर कमल जहिड़े शोभनीक मुखड़े मंझा दासनि जे दुख नासु
करण ऐं सुखनि जे सिरजण लाइ श्री गुरदेव जनि इहो श्लोकु उचारणु
क्यों ऐं पंहिजी मधुर वाणी अ साणु सभिनी भक्तनि जे मन खे मोहे
छदियाऊं ।

चौ०- और अनेकहिं प्रभ की बाणी । कहि न सकउ मैं बुद्धि अंयानी ।
भूल चूक प्रभु बखिशण हारा । श्री गुर आतम राम मुरारा ॥२६॥

बी बि मुंहिजे प्यारे प्रभू स्वामी जनि जी घणी वाणी आहे पर मुंहिजी
अजाणु मति उन खे नथी जाणी सघे । परम कृपाल मुरारी भगुवान
स्वामी आत्मारामु साहिबु मूं बालक जूं सभु भुलूं चुकूं बखिशीश इहो मूं
खे दृढ़ विश्वासु आहे ।

दो०- गिरा सागरा गुरु की मम नहीं पावौं पार ।
मैं शिशु अनजान हूं श्री गुर बखिशणहार ॥२७॥

अथाह समुद्र वांगे मुंहिजे श्री गुरदेव जी मिठी वाणी आहे, मां
अणजाणु बालकु उन जो कींअ पारु पाईदुसि । सदां बखिशंद श्री गुर देव
जे कृपा जोई मूं खे सहारो आहे ।

सो०- श्री प्रभ आतमराम अनुज सीतलंपर कृपा ।
सेतु रूप प्रभ नाम तारे जो भव सागर से ॥२८॥

श्री प्रभू आत्माराम साहिब जी जै हुजे जिनि मां बालक गरीब
श्रीखण्ड ते केदी कृपा कई आहे जो भव सागर खां तारण वारे, संसार
समुद्र जे पुलि सरूपु पंहिजे मधुर नाम जो दानु दिनो अथनि ।

क०- दोऊ कर विंद करविंद श्री आत्मराम
 देत हैं अनंद सीतलं सु निज दास को ।
 सियाल ते मृघंदु आप करे गोद नंद
 प्रभ सुन्दर मुखारिविंद सोहत है जासु को ।
 मैं हू प्रभ कृतघ्न तुव उपकारी नाथ
 कृपा करि दास पर धारत हुलास को ।
 धियावैं श्री आत्मराम प्रेम से प्रभू को नाम
 सीतल शरणि आयो ऐसे सुखरास को ॥२९॥

मां श्री स्वामी जनि खे बड़ै हथिड़ा बधी प्यार सां वंदना थो करियां
 जे सदां आनंद जो दानु था दियनि पंहिजे दास गरीबि श्रीखण्ड खे,
 पंहिजी वात्सल्य भरी गोद में विहारे पंहिजे बचनि खे गिदड़ मां शींहु था
 बणाईनि । संदनि मुख कमलु सदां शोभायमान आहे । हे परम उपकारी
 बाबा ! तूं सदां उपकार करीं थो पर मां कृतघ्न थी भुलाए थो छदियां ।
 तदहीं बि तूं दास ते कृपा दृष्टि सां प्रसन्न थो रहीं । हे शरणि पाल प्रभू
 मां गरीबि श्रीखण्डु तवहां जे चरण कमलनि जो ध्यानु धारे, प्रेम सां
 मधुरु नामु जपे तवहां जी सुखराशि शरणि में आयो आहियां ।

दो०- जेहि करुणा ते गर्भ मंहि अगिनि स्पर्श न होय ।
 एसो आत्मराम प्रभू रक्षकु है मम सोइ ॥३०॥

जंहि प्रभू अ जी सहज कृपा साणु हिन जीव खे माता जे गर्भ में
 जठारागिनि कुछु भी भउ न थी देई सघे, अहिड़ो समर्थु स्वामी आत्माराम
 प्रभू मुंहिजो सदां रक्षकु आहे ।

सो०- जपि श्री आत्मराम, सबै मनोरथ सिद्धि तव ।
 प्रगटे उर मंहि ज्ञान, ध्यान धारि तिस हृदय में ॥३१॥

हे मुंहिजा सदोरा मन ! तूं सदां स्वामी आत्माराम साहिब जो पावनु
 नामु जनि त तुंहिजा सभु मनोरथ सिद्धि थींदा । जे तूं स्वामी जनि जे
 चरण कमलनि जो हृदय में ध्यानु धारींदे त तुंहिजे हृदय में ईश्वर जो
 सत्य ज्ञानु प्रगटु थींदो ।

चौ०- जंहि करुणा ते रूप अनूपा । दियो जांहि गुर सुन्दर रूपा ।
नाम दान इश्नान जु देता । तिसु तजि भ्रमत विषय के हेता ॥३२॥

हे मन ! जंहिजी कृपा सां तो सुन्दरु रूपु प्राप्त कयो आहे जंहिजी
कृपा सां तोखे नाम जो दानु मिलियो आहे, जंहि पंहिजी चरण रजिड़ी अ
सां तोखे इश्नान करण जो सौभाग्यु दिनो आहे उन कृपा निधान सुन्दर
गुरदेव खे विसारे तूं विषयनि लाइ छो भटिकी रहियो आहीं ?

चौ०-

मन मूरख अजहूं नंहि जानत । जिस करुणा ते सब तुझ मानत ।
श्री प्रभ आतमराम स्वामी । दास सीतलकरि अभिरामी ॥३३॥

अड़े मूर्ख मन ! तूं अजां बि नथो ज़ाणी त जंहि कृपाल प्रभू अ जे
कृपा जे सदिके सभिकरे तोखे आदुर सां मजें थो, उहो प्यारो प्रभू श्री
स्वामी आत्मारामु साहिबु आहे, जंहि मां दास गरीबि श्रीखण्ड खे पंहिजी
कृपा दृष्टि सां सुन्दर कयो आहे ।

चौ०- जपत जपत श्री आतमरामू । कष्ट रूप नंहि दिखि यम धामू ।
सदां हमारे संग प्रभु बसे । दूख दरिद भ्रम मन ते नसे ॥३४॥

जेके श्री स्वामी जनि जो मधुरु नामु जपिनि था उन खे कष्ट रूपु
जम जो धामु नज़रि बि न ईदो, उहो दयालु प्रभू सदां असां सां गदु थो
वसे, जंहिजे प्रताप सां मन जा दुख दरिद भ्रम सभु नाशु थी था वजनि ।

चौ०-

दास सीतलदे नित नामू । श्री प्रभ आतमराम आरामू ।
दीन दयान प्रभू सदां शांति घन । करत निहाल प्रभ सब को मन
॥३५॥

पंहिजी आत्मा में आरामी, स्वामी आत्माराम जनि दास गरीब
श्रीखण्ड खे पंहिजे मधुर नाम जी बखशीश देई कृतार्थ कयो आहे ।
दीननि जा माइट शांति जा बादल श्री स्वामी जनि कृपा करे सभिनी जा
मन निहालु था करनि ।

चौ०- दीन बंधु प्रभ दीन दयाला । दीन सीतलपर सद कृपाला ।
चरण फल पिता हमरे हृदयं । दाह सख कंदर्प की भिदियं ॥३६॥

दीननि जा बंधू, दीननि ते दया करण वारा प्यारा प्रभू मां दीन बालक ते परम कृपा करे मुंहिजे हृदय में पंहिजा चरण कमल ब्राजमानु कयो ऐं कृपा करे कामदेव जी अगिनि नाशु कयो ।

दो०- कुसुम पान मैं माथ परि धारो दीन दयाल ।

आत्मज की तुम प्रभु आप करो प्रतिपाल ॥३७॥

हे दीनदयाल भगुवान पंहिजो हथिड़ो गुलिड़ो मुंहिजे मस्तक ते धारणु कयो । पंहिजे बचे जी प्रभू ! पाण ई पालना कयो ।

सो०- श्री गुर दीन दयाल अनुचर सीतलमाथ पर ।

धारो पान कृपाल अबै पूरण करो ॥३८॥

हे दीन दयाल प्रभू ! मां सेवक गरीब गरीब श्रीखण्ड जे मस्तक ते पंहिजो कृपा भरियो हथिड़ो धारणु करियो । मुंहिजी सभु अभिलाषा जो हाणे हीउ अध्यायु पूरण थो थिए ।

दो०- इति श्री गुर अष्टकं शुभं भयो पंचमो ध्याउ ।

श्री गुर आत्मराम प्रभु जस मैं वरणि सुनाउ ॥३९॥

हीउ श्री गुर अष्टक जो पंजों अध्याउ पूरण थियो, जंहि में प्यारे सतिगुर देव जो सुंदरु जसु वरिणनु करे बुधायो ।

इति श्री आत्मारामगीते श्री गुर अष्टक पंचमो ध्याउ ।

अथ छठिवां अध्याय प्रारम्भ

दो०- उडप करोरे मन त्वं श्री प्रभ गिरिजानंद ।

दुरूप रूप पापार निद्धि तरि विघ्नं सुनिकंद ॥१॥

कृपा निधान साहिब मिटिड़ा श्री गणेश भगुवान जी वंदना था करनि
ऐं मन खे समुझाइनि था त हे मन ! तूं सभिनी विघ्ननि खे नासु करण
वारे श्री पारवती अ जे प्यारे बालक गणेश भगुवान जे नाम खे जहाजु
बणाए हिन पाप पयोनिधि संसार खां तरी पारि पउ ।

सो०- शरणि श्री आतमराम रे मन तूं तो त्यागि जनि ।

दान देत सिख नाम, ऐसे प्रभु तारण तरण ॥२॥

ओ मुंहिजा सदोरा मन ! तूं कदहीं भी श्री स्वामी आत्माराम साहिब
जी शरणि न छड़िजाइ । जेके पंहिजे दासनि खे प्रभु अ जे मधुर नाम जो
दानु दियनि, अहिड़े तरण तारण प्रभू अ जी सदाई जै हुजे ।

सो०- जपते आतमराम, अब कलंक छूटे तबै ।

अखिल लछण धाम, श्री गुर आतम राम प्रभू ॥३॥

श्री स्वामी जनि जे मधुर नाम जपणं सां सभेई कलंक हिकिड़ी छिण
में छुटी था वजनि । समूह गुणनि जो घरु परम कृपालु श्री गुर देव श्री
आत्माराम साहिब आहिनि ।

सो०- जग जीवन दिन चारि, कंदर्पादि तजि हरि भजो ।

शरणि गहो सुविचारि, ऐसे श्री गुर मुक्ति दा ॥४॥

हिन संसार में जीअण जा रुगो चारि दींह आहिनि, तंहि करे हे जीव
! तूं काम आदिक विकारनि खे छड़े प्यारे भगुवंत जो भजनु करि, पर
भगुवान जो भजनु तदहीं सुगमु थींदुइ जदहीं सुठनि विचारनि सां अहिड़े
मुक्ति दाता श्री सतिगुर जी शरणि वठंदें ।

सो०- समरज ओ मारादि, नष्ट होइं गुर सेवा ते ।

श्री गुर चरण आराधि तबै सुख मिलै अपवर्ग ॥५॥

सतिगुर जी सेवा करण सां काम क्रोध आदि विकार नासु थी था
वजनि । तंहि करे तूं सतिगुर देव जे चरण कमलनि जो आराधनु करि
त तोखे मुक्ति जो सुखु प्राप्त थिए ।

सो०- दया दीन पर नेह ईश्वर अंश अतिथि लखि ।

जस विधि श्री खण्डेउ तस सुभाव पभ सीतलं ॥६॥

श्री स्वामी जनि जो सदा दीननि ते प्यारु आहे । दया भरिये हृदय
सां सभ कंहि अतिथी अ खे ईश्वर जो अंशु करे दिसनि था, मुंहिजे प्यारे
प्रभू अ जो सुभाउ चन्दन वांगे ठंढिड़ो ऐं सुखदाई आहे ।

दो०- सद अम्बुद संतुष्ट प्रभु निजानंद में लीन ।

सुख दुख की नंहि कान कछु श्रीगुर अस प्रवीन ॥७॥

परम प्रवीन श्री गुर देव सदां प्रसन्न वदन ऐं आत्मानंद में मगनु
आहिनि जंहि आनंद में बाहरि जे सुख दुख जी का परिवाह न अथनि ।

दो०- सुधा गिरी की वृष्टि करि दया दृष्टि के साथ ।

सीतलपर प्रभु हाथ धरि कृपा सिंधु मम नाथ ॥८॥

हे कृपा जा समुद्र मुंहिजा मालिक ! पंहिजी कृपा दृष्टि सां अमृत
समान मधुर वाणी अ जी बरिसाति करे मां गरीब श्री खण्ड बालक ते
पंहिजो कृपा भरियो हस्त कमलु धारणु कयो ।

दो०- सम मुदिता निरदीनता निर्भय सहित विचार ।

अस श्री आतमराम प्रभ करि कीरति संसार ॥९॥

प्यारे प्रभू श्री आत्माराम जनि जी सारो संसारु इहा कीरति थो गाए
त स्वामी जनि सभिनी में समता जी नज़र वारा सदा प्रसन्न, निर्भउ उतम
विचारवान आहिनि ऐं कदहीं भी कंहिजे आदो दीन न थिया । सदा
पंहिजे आनन्द में ई मगनु आहिनि ।

सो०- रटत नाम भव पारि, अस गुरदेव तारण तरण ।

मुक्ता गिरा निहारि श्रवण करत पापी तरें ॥१०॥

प्यारो सतिगुर देवु समुद्र जे समान गम्भीरु आहे जिनि जे नाम
जपण सां सहज में संसार खां पारि थो थिजे । संदनि मोतियुनि समान
सुन्दरु वाणी बुधण सां पापी भी तरी था वजनि ।

छंद०-

श्री आतमराम सभ सुख धामं भवं के मझारे लयो भव मुरामे ॥११॥
भवं करन हेता पठियो भव करेता जु ईछनि कृपारे मनोभाव पुजारे
॥१२॥

कियो समर समरं जती रहि सु अमरं प्रकाशं श्री हंसा सबनि आवितंसा
॥१३॥

मुक्ति दा जुजसं सदा हृदय वसं सदं वारि जाऊं सिमरि सुख पाऊं
॥१९४॥

स्वामी श्री आत्माराम साहिबु सभिनी सुखनि जा धाम आहिनि । हिन संसार में जणु मुरारी भगुवान ही जनमु वरितो आहे अथवा जीवनि के कल्याण करण वास्ते जगदीश्वर भगवान जी इच्छा साणु आया आहिनि जंहि दे कृपा साणु निहारीनि था तिनि जा काम आदिक विकार जली था वजनि । जिनि कामदेव खे युद्धि में जीते पंहिजे जती पणे खे अमरु कयो आ, जिनि जो सूरज जे समान प्रकाशु आहे । सभिनी सति पुरुषनि जा मुकुट मणि सरूप आहिनि । जिनि जो जसु मुक्ति जो दानु द्रियण वारो आहे । उहो सदां मुंहिजे हृदय में निवासु करे, अहिडे समर्थ सतिगुर तां मां सौ सौ वार सदिके थियां जिनि जे सुमरण करण साणु मां सदां सुखु थो माणियां ।

दो०- श्री गुर की सागर गिरा मैं नंहि पावहुं पार ।

मैं शिशु जस क्या जानिहों कृपा जु श्री करतार ॥१९५॥

श्री गुरदेव जी वाणी समुद्र जे समान अगाध आहे तंहिजो पारु मां नथो पाए सघां अबोझु बालकु कुछु नथो ज़ाणां उन प्यारे करतार जी कृपा ही मूं खां जसु थी गाराए ।

सो०- श्री प्रभु आतमराम दासनि की रक्षा करत ।

तांको रटि मन नाम भव सिंधु उतरो तुरत ही ॥१९६॥

हे मुंहिजा समुझू मन ! दासनि जी रक्षा करण वारे स्वामी आत्माराम साहिबनि जो मधरु नामु रटे बिना देरि हिन भव सागर खां पारि थीउ ।

चौ०- श्रीगुर जस निधि पार न पाऊं । रंचक जस मैं वरिणहि पाऊं ।

श्री हरि आतमराम सहाई । चरण धन चाहत है माही ॥१९७॥

श्री सतिगुर जे जस समुद्र जो मां पारु नथो पाए सघां उन जस जी निधी अ मां मां हिकु कणो वर्णनु करे बुधायां थो । भगुवंत सरूपु स्वामी आत्माराम कृपा करे मूं सां सहाय थियो । मुंहिजो मनु मछुली थी तवहां जे चरण रूपु जल सिंधु में रहणु थी चाहे ।

चौ०- अधिपति सम जेहि देश प्रतापा । दास सबै उन नामहिं जापा ।

कृपासिंधु श्री आतमरामू । मुक्ति पंथ सब देते नामू ॥१९८॥

स्वामी जनि जो पंहिजे देश में राजा जे समान प्रतापु आहे । सभेई दास संदनि नाम जो जापु था जपीनि कृपा जो समुद्र स्वामी श्री आत्माराम साहिबु सभिनी खे नाम जो दानु देई मुक्ति जे रस्ते ते हलाइनि था ।

चौ०- श्री प्रभ आतमराम सुधावत । बानी रत्ननि करि जनु भूखत ।
प्रभु जु आतमराम दयालू । सबर अज बांहत धरि भालू ॥१९॥

स्वामी जनि जी वाणी अमृत खां मिठी आहे सुन्दरता में जणु रतनि साणु सींगारियल आहे । हे दया सिंधु प्रभू ! मुंहिजे मस्तक ते पंहिजो हथिड़ो गुलिड़ो धारणु कयो ।

चौ०- करुणा करि प्रभ दीन दयाला । गंध सार सम सीतलआला ।
सदां वसो श्रीखण्ड हृदे में । ध्यावत हों मैं प्रभु अति प्रेमे ॥२०॥

हे कृपा जी निधी दीनबंधू प्रभू ! काफूर मिलियल चंदन जे समान विशाल ठण्डक वारा तवहां कृपा करे सदाई मां गरीबि श्रीखण्ड जे हृदय में निवासु करियां । हे प्रभू ! मां तवहां खे प्रेम सां ध्यायां थो ।

दो०- श्रीगुर आतमराम को मनुज जानि भगुवान ।
ऐसो प्रभु तारण कहूं न पैये आन ॥२१॥

हे मनुशो ! श्री गुर देव स्वामी आत्माराम साहिब जनि खे साक्षात भगुवंतु करे समुझो । अहिड़ो तरण तारण प्रभू बियो कोन मिलंदुव ।

सो०- दर्शन की प्रभ चाह, सीतलतुम्हरे अनुचर ।
कृपा करो आगार, श्री गुर आतम राम जूं ॥२२॥

हे नाथ ! तवहां जे बान्हड़े गरीबि श्री खण्ड खे तवहां जे दर्शन जी घणी प्यास आहे । हे सचा सतिगुर ! पंहिजी कृपा दृष्टि सां मूं खे सदा सुजागु कयो ।

क०- तरुणी के भोग जोऊ डारि दीने प्रभ सोऊ
आयुर में कबहूं न दरशे त्रियंग है ।
निजानंद में जु लीन दुख सुख में विहीन
विष्ट छोड़ि दीन अस काचुरी भुयंग है ।
विष्णु पदी के सम अंब्र जो महापवित्र
चरण बनं को वीय मानो नीर गंग है ।

श्री प्रभ आतमराम सेवत पुमान धाम
अबुज समान वक्र देखि पाप भंग है ॥२३॥

श्री स्वामी आत्मराम साहिबनि पूरणु ब्रह्मचर्य वृतु पालियो । स्त्री अ
जा सुख भोग सभु त्यागे छदियाऊं । पंहिजी सारी जिन्दगी अ में कंहि
स्त्री अ जो अंगु न दिठाऊं । सदां आत्मआनंद में मगनु सुख दुख जे
जाल खां परे थी विषयनि खे इयें छदियाऊं जियें नांगु खल खे छदींदो
आहे । श्री गंगा देवी अ जे समान जिनि जा महा पवित्र चरण कमल
आहिनि । चरणामृत जे पान करण सां श्री गंगा जल जे पान करण जो
आनंदु प्राप्त थिये थो । सभेई स्त्रयूं पुरुष स्वामी जनि जी सेवा करनि था
। कमल जे समान सुंदर मुखिड़े जो दर्शनु करण सां सभेई पाप नाशु था
थियनि ।

दो०- तड़ता पति सम दास परि श्रीगुर आतमराम ।
बरिशियो सीतलपर प्रभू दया सिंधु सुख धाम ॥२४॥

प्यारे श्री गुरुदेव दास गरीब श्रीखण्ड जे मथां बादल जे
समान कृपा जी बरिसाति कई । अहिड़े दया जे समुद्र, सुखनि
जे घर प्यारे प्रभू अ जी सदां जै हुजे ।

सो०- चला समान सुजान, तेजु सु श्रीगुर अति प्रगट ।
घन के सम जग जान, बिजली से चमकत सदां ॥२५॥

बिजली जे समान श्रीगुर देव जो अनूपमु तेजु जगत्र
रूप बादलनि में जाहिरु चमकी रहियो आहे ।

दो०- ऐल समानु सुअंबकं ऐल हरत त्रिय लोक ।
गिरा अगाधं कंनिधि बुधि कंह करन अशोक ॥२६॥

स्वामी जन जा नेत्र हरिणनि जे नेत्रनि समान सुन्दर
आहिनि, जिनि जी पवित्र दृष्टि टिन्हीं लोकनि जा पाप थी
मिटाए । अगाध समुद्र जे समान सुन्दरु वाणी दासनि जा समूह
शोक निवृत्ति थी करे ।

क०- तखत पर बैसि राजकीन बिबुधं समान
मानो भानु उदियत प्रकाश तीनों लोक में ।
पाण्डु गुण दे वरष राजु कीनो दीन बंधु

पीछे जु पयान कीन श्री वैकुण्ठ ओक में ।
है तो श्री गुरु अमर जग में करत सैर
नाहीं काहूं सों सुवैर कुबहूं न सोक में ।
जीवन मुक्ति गुरु फिरत जगत प्रभ
सुखी निजानंद धाम तार दास नोक में ॥२६॥

कृपा निधान साहिब मिठा फरिमाईनि था त स्वामी आत्मा राम जनि
तखत ते ब्राजमानु थी देवताउनि जे समान राजु कयाऊं । जियें सूरज जे
उदय थियण सां टिन्हीं लोकनि में प्रकाशु थो थिए तियें स्वामी जनि जो
मधरु प्रकाशु जेदाहुं तेदाहुं फैलिजी वियो । दीन दयाल प्रभुनि टेवजाहु
वरिह पृथ्वी ते राजु कयो, तंहि खां पोइ पंहिजे नित्य धाम वैकुण्ठि में
निवासु कयो । सतिगुर देव सदां अजरु अमरु आहिनि । संसार में
जीवनि जे कल्याण वास्ते सैरु करनि था । सर्वदा निर्वैर आहिनि ऐं
अशोक आहिनि । श्री गुर सदां जीवनि मुक्ति ऐं निजानंद में सुखी रही
संसार में विहरनि था, दासनि जो तारणु हिकिड़ी कृपा जी कोर जो
कलोलु आहे । अथवा पंहिजी कृपा रूपु बेड़ी अ ते चाढ़े तारीनि था ।
दो०- श्री गुर को अब सम्बत लिखैं जु बुद्धि विशाल ।
दया करो प्रभ दास परि सीतलकरो रसाल ॥२७॥

हाणे विशाल बुद्धिमान प्यारे श्री गुरदेव जे दिव्य धाम गमन जो
सम्बतु था लिखूं । हे परम कृपाल प्रभू ! मां दास गरीब श्रीखण्ड खे
कृपा करे पंहिजे सनेह जे रस सां रसीलो कयो ।

सो०- कीय पयान परलोक शशि गृह तस्कर गुण वरष ।
सब पुमान को शोक गीरवान जै जै करी ॥२८॥

श्री स्वामी जनि सम्वत १६५३ में दिव्य धाम में प्रवेशु कयो ।
उन्हीय समय में पृथ्वी अ जा सभेई मनुष्य घणो व्याकुलु थिया
पर देवताऊं हर्ष हुलास सां जै जै करे स्वामी जनि जो स्वागतु
करण लगा ।

दो०- अबै गाथ पूरण करें श्री गुर आतम राम ।
सीतल वंदति चरण को जो दायक गुण ग्राम ॥२९॥

हाणे परम कृपाल गुरदेव स्वामी आत्माराम जनि जी नृमल

कथा पूरणु थी । मां बालकु श्रीखण्डु स्वामी जनि जे चरण
कमलनि में घणी श्रद्धा स्नेह सां वंदना प्रणामु थो करियां जे श्री
चरण कमल समूह सृष्टि जे गुणनि जो दानु दियण में सदां
समर्थ आहिनि ।

चौ०- अब वंदौ श्री गुर के शिष्य । श्री गुर राधाकृष्ण महारिष्य ।
सब पमान आधार जोई प्रभ । सीतलचरण जु वंदत जग सभ ॥३०॥

हाणे सतिगुर देव जे प्यारे शिष्य जे चरणनि में वन्दनु था
करियूं जे महान रिषी अ जे समान श्री राधाकृष्ण मधुर नाम वारा
आहिनि । सभिनी सेवकनि जो आधारु आहिनि । उन्हनि जे
ठण्डड़े चरण कमलनि में सारो जगु वंदना थो करे ।

दो०- अबै ध्यायु पूरण भयो संतो करो सहाय ।
श्री गुर आत्मराम जस पूरणु कर प्रगटाय ॥३१॥

इति श्री गुर अष्टक सभर पूरणु भयो ध्यायु ।
षष्ठम् नाम समापतं आगे जसु पुनि गाउं ॥३२॥

इति श्री गुर अष्टकं लीला श्री आत्मरामे महा पुनीत
षष्ठम् प्रभाउ समापतम् ।

अथ सतों अध्याउ

दो०- तरु वैरी आश्रय नमो इख वाकु जिंह पान ।

दुष्ट विघ्न हर खण्डनु गिरिजानंद सुजान ॥१॥

कृपा निधान साहिब मिठिड़ा श्री गजानन भगुवान खे वन्दना था करनि ऐं विनय था करनि त हे श्री पारवती नंदन ! दुष्टनि ऐं विघ्ननि खे नासु करण वारा, सुन्दर गुलिड़नि जहिड़नि हथिड़नि वारा सुजान शिरोमणि प्रभू ! तवहां जी सदा जै हुजे ।

दो०- कृपा सिंधु श्री गणपति अलकंहि धारो हाथ ।

श्री राधा कृष्ण जसं करो प्रगट हो गाथ ॥२॥

हे कृपा जा समुंड श्री गणेश भगुवान ! मुंहिजे मस्तक ते कृपा करे हथिड़ो धारियो ऐं कृपा कयो त मां श्री राधाकृष्ण महाराज जे जस जी कथा प्रगटु करियां ।

छं०- नमो श्री भवानी सबनि दुष्ट हंती ।

सु सीतलजु वंदत नमो श्री बेअंती ।

करुणा निधे चण्डका जग पुजंती ।

नमो श्री भवानी नमो श्री भगवंती ।

दया मातु कीजे एही दानु दीजे ।

लीला गुरु की समापत सु कीजे ॥३॥

हे श्री पारवती अमड़ि ! सभिनी दुष्टनि खे नासु करणवारी । तुहिंजे चरण कमलनि में मां नमस्कारु थो करियां । हे बेअंतु अमां तो खे मां गरीब श्रीखण्डु बालु नमस्कारु थो करियां । हे जग पूजनीय कृपा निधि चंडिका अमां ! संसार सागर खां तारण वारी ! तुंहिजी जै हुजे । हे माता ! मूं ते दया करे इहो वरदानु दियो त मां श्री गुर देव जी लीला जो पूरणु कथनु कयां ।

सो०- श्री गुर आतम राम, कृपा सिंधु आश्रय नमो ।

तिसी शिष्य अभिराम, श्री राधा कृष्ण सुमर ॥४॥

श्री सतिगुर स्वामी आत्माराम साहिब कृपा समुद्र जे चरणनि में नमस्कारु थो कयां जिनि जो सुन्दरु ऐं सुघडु शिष्यु आहे श्री राधा कृष्ण साहिबु ।

चौ०- तासु शिष्य श्री राधा कृष्ण । बैस तखत दासनि किय जिशनं । कीय प्रकाश गुर हिमकर के सम । जांसु ध्यान नाशं हुवे भव यम ।।५।।

स्वामी श्री राधा कृष्ण जू जढ़हीं सिंहासन ते बृजमानु थिया तढ़हीं दासनि खे दाढी खुशी थी । श्री गुर देव सतिसंग सभा में चन्द्रमा जे समान प्रकाशमानु थिया । उन्हनि जे चरण कमलनि जो ध्यानु यमराज जे भय खे बि नाशु थो करे ।

चौ०- श्री गुर राधा कृष्ण कृपालु । मम मनमथ पित मैं कर आलू । मस्ते की अति दुति है जाहीं । मानों कोट सूर परछाहीं ।।६।।

हे श्री गुर देव श्री राधा कृष्ण चन्द्र जूं ! कृपाल प्रभू ! मुंहिजी आत्मा में सदां घरु कयो । कहिड़ो आहे प्यारो गुरु देवु जिनि जे मस्तक जो तेजु किरोड़ सूरज जे समान आहे ।

चौ०- नेत्र विशाल अम्बुज सुन्दर । श्री प्रभु राधाकृष्ण पुरंदर । जिंह हेरहि करुणा की खाना । भव कृतांत तिंह जन को हाना ।।७।।

जिनि जा नेत्र कमल सुन्दरु ऐं विशाल आहिनि । स्वामी श्री राधाकृष्ण इन्द्र जे समान तेजस्वी, जंहि दे कृपा दृष्टि सां निहारीनि था तंहि खे कढ़हीं यमराज जो भउ दिसिणो न थो पवे ।

चौ०- नमो नाथ करुणा निधि स्वामी । जाउं वारि सद तुमरे नामी । दास सीतलपद रज करीए । जस तुमरा तब वरणनु करीए ।।८।।

हे करुणा निधान स्वामी ! हे नाथ ! तोखे नमस्कारु आहे । तुंहिजे मिठिड़े नांव तां सव वार सदिके वजां । मां दास गरीब श्रीखण्ड खे पंहिजे चरणनि जी रज कयो त मां तवहां जो निर्मलु जसु सिक सां वरिणनु कयां ।

चौ०- तुमरी लीला अगम अनंता । आइ अनंत जु पाइ न अंता । तुम श्री गुर करुणा निधि स्वामी । तुण्ड मारतुंड सु समानी ।।९।।

हे प्रभू ! तुंहिजी लीला अनंत ऐं अगमु आहे । पाण शेषु भगुवानु
बि अंतु न पाए सघंदो । हे करुणा निधि स्वामी श्री गुर देव ! तवहां जो
मुखड़ो सूरज जे समान प्रकाशमानु आहे ।

दो०- दर्शन राधाकृष्ण को सीतलहर जुर तीन ।

चरण मनोहर वंदना चहिक बंध जिउ मीन ॥१०॥

श्री स्वामी राधाकृष्ण जो नृमलु दर्शनु टिन्हीं तापनि खे नासु करण
वारो आहे ऐं हृदय खे ठण्डक दियण वारो आहे । उन्हनि जे मनोहर
चरण कमलनि खे मां वंदना थो कयां । जियें मछुली अ खे पाणी मिठो
लगंदो आहे तियें मूं खे श्री गुरदेव जा चरण कमल मिठिड़ा था लगनि ।

सो०- राधा कृष्ण सुजान, ज्ञाता ज्ञान अरु गेय का ।

चरण परे दासान, कृपा करो श्री आदियंत ॥११॥

श्री स्वामी राधा कृष्ण जू परम सुजान, ज्ञान ऐं उन जी साधना जा
पूरणु वेता आहिनि । हे सूरज रूपु सतिगुरु ! पंहिजे चरण शरणि दासनि
ते सदां कृपा कयो ।

चौ०- अम्बुध सम अगाध जिंह ऊपा । मिहर समान जास को रुपा ।

ऐसे दे निधि का जस गाऊं । नहीं लहौं मैं अंत कदाहूं ॥१२॥

श्री राधा कृष्ण सरिता पति । बिबुध समान जासु विमलं मति ।

जिनि नृमल बिधु के समवानी । ज्ञान घनं प्रकाश रवि सानी ॥१३॥

श्री राधा कृष्ण राधापति । नहीं भेद राई सम दिन पति ।

सीतलपति सु परम उपकारी । श्री गुर राधा कृष्ण मुरारी ॥१४॥

करुणा निधि प्रभ अपने दासा । सीतल को करि सदां हुलासा ।

चरण शरणि चेरी मैं तेरी । कृपा सिंधु लीजे सुधि मेरी ॥१५॥

सीतल को प्रभ त्वं बप खासा । श्री प्रभ राधा कृष्ण विभासा ।

अम्बुज बनज समान जु श्रीगर । ध्यावत सीतल मन वच क्रम कर

॥१६॥

जिनि जी समुद्र जे समान अण गणी उपमा आहे । सूरज जे समान
जिनि जो रूपु आहे, संदनि जसु समुद्र समान आहे । उहो जसु केतिरो
बि गाइजे उन जो अन्तु न थो लही सघिजे । श्री स्वामी राधाकृष्ण ज्ञान
जो समुद्र समान आहिनि । जिनि जी मति देवताउनि समान सुन्दरु ऐं
पवित्र आहे जिनि जी वाणी चन्द्रमा जे समान ठण्डिड़ी आहे । जे ज्ञान
जा बादल ऐं सूरज जे समान प्रकाशमान आहिनि । श्री स्वामी राधाकृष्ण

ऐं भगुवान श्री कृष्ण में तिर जेतिरो बि भेद कोन आहे । मां गरीब श्रीखण्ड जा मालिक परोपकारी श्री गुरदेव श्री राधाकृष्ण साक्षात मुरारी भगुवानु आहिनि । पंहिजे दासनि जे मथां कृपा करण वारा स्वामी मूं बालक खे सदां हुलास जो दानु दियो । मां ब्रान्हिड़ी तवहां जे चरणनि जी शरणि आहियां । कृपा जा समुद्र तवहां मुंहिजी सदां सुधि लहिजो । मां बालक खे तवहां जी ई कृपा जो आसिरो आहे । हे प्रकाशवान श्री गुरदेव ! तवहां जे गुलिड़नि जहिड़े चरण कमलनि जो मां मन करम वचन सां ध्यानु थो धारियां ।

दो०- श्री गुर राधा कृष्ण जू अंब रवींद्र ध्याइ ।

करौ कथा सुखदायनी करियो भूल छमाहि ॥१७॥

सतिगुर श्री राधा कृष्ण जे चरण कमलनि जे नख पंक्ति जो ध्यानु करे सुखनि जे दियण वारी कथा थो गायां । हे महिरबान गुर देव ! मुंहिजूं सभु भुलूं क्षमा कजो ।

दो०- श्री सतिगुर सहाय मम सिमरि सिमरि दुख नाशु ।

श्री गुर राधाकृष्ण जपु नाशु होहिं भव त्रास ॥१८॥

सतिगुर देव मूं सो सदां सहाय थींदो, जिनि जे सुमरण सां कामादिक सभु विकार नाशु था थियनि । सतिगुर श्री राधाकृष्ण जे नाम जपण सां संसार जा सभेई भव मिटी था वजनि ।

सो०- सदन सुखनि गुन भूर, सुन्दर वदन निकंद दुख ।

जै जै मंगल मूर, श्री गुर राधाकृष्ण जूं ॥१९॥

छं०- नमो श्री गुरु दीन दयालं कृपालं ।

सीतलजु वंदत दया को जु आलं ।

लीला तुमरि उष्ट श्री गुर जु गावों ।

करुणा निधे वासु सूनयं करावो ॥२०॥

मंगल मूरति श्री गुर देव श्री राधाकृष्ण जी जै हुजे जै हुजे, जे समूह गुणनि सां भरपूर सभिनी सुखनि जा घर आहिनि । जिनि जे मुख कमल जो दर्शनु सभिनी दुखनि खे मिटाए थो । हे दीननि ते दया करण वारा कृपा निधान गुरदेव तवहां खे वार वार नमस्कारु आहे, दया जा अङ्ग, मां बालकु तवहां खे वंदना थो करियां । हे प्यारा गुरदेव ! तवहां जी

मिठी लीला मां चपिड़नि सां गायां थो । हे करुणा जा समुद्र, मुंहिजे ह्दें
में सदां निवासु कयो ।

छं०- ओ वज्र के सम जु अबृज प्रभू के, होने दरेंढ कृपा सिंधु जू के ।
गिरा दधि समानं जु श्री गुर अगाधं, वंदो प्रभू के जु ग्रामं गुलाधं ॥२१॥

जंहि प्यारे प्रभू अ जी नख पंकति हीरनि वांगे चमके थी, जिनि जी
वाणी खीर समुंड वांगे अगाध आहे ऐं उज्वलु आहे, जो समूह श्रेष्ठनि
गुणनि जो समुंडु आहे, उन प्यारे गुरदेव जे चरणनि में मां वंदना थो
कयां । मां शल चरण गुलिड़नि जो भंवरु थियां । इहा मूं ते भगुवंतु कृपा
करे ।

दो०- दार दीप सुत अबुकं श्री गुर ज्ञान विशाल ।
भद्र करत प्रभ दास के जै जै वदन मराल ॥२२॥

दासनि जे नेत्रनि में ज्ञान जो सुरिमो पाए, बुद्धि खे विशालु बणाए
दासनि जो कल्याण करण वारे हंस सरूप सतिगुर जी जै हुजे, जै हुजे ।

सो०- नाशु जु विरह विदार सीतलको प्रभु दया ते ।
घन रसं सुत पापार एस नेह लागो हमें ॥२३॥

जिनि जी कृपालुता सां मां बालक जा कामदेव आदिक विकार नासु
थी विया, इन्हीअ करे जियें गुल जो जल सां नीहु आहे तियें मुंहिजो बि
सतिगुर सां प्यारु आहे ।

क०- दीन दयाल राधाकृष्ण करत कलोल जिश्न,
मन मथ पित जास विश्ण में निवास है ।
काय को प्रकाश ऐस समीर सखाइ जनु,
बणत से सीतलभनत जास तास है ।
कपस पै बृजमान राधाकृष्ण तम हानि,
वरन न सकत जु प्रभ की सपास है ।
बांहज विशाल प्रभु धारो सीतल के भाल,
आश्रय की लाल सुत की जु मोको आस है ॥२४॥

दीन दयाल प्रभू श्री राधा कृष्ण जू सर्वदा सुंदर कलोल था करनि,
जिनि जे हृदय में सदां श्री विष्णु नारायण जो निवासु आहे, जिनि जे
शरीर जो प्रकाशु अग्निनि जे समान आहे, मां बालकु चपिड़नि सां जिनि
जो जसु थो गानु करियां, सेजा ते बृजमान गुर देव दासनि जे अज्ञान

ऊंदहि खे मिटाइण में समरथु , तिनि जे महान जस वर्णन करण कंहि
खे ताकत आहे ?

हे महरबान सतिगुर ! मूं खे तवहां जे मुख कमल जो ई आसिरो
आहे, कृपा करे मां बालक जे मस्तक ते पंहिजो कृपा पूर्ण हथिड़ो गुलिड़ो
धारणु कयो ।

दो०- आमानीय जस भनत जिस श्री पति विष्णु देउ ।

सदा ध्यानु उर में रहे राधाकृष्ण अभेउ ॥२५॥

श्री विष्णु भगुवान जे समान स्वामी श्री राधा कृष्ण देव जो मां सदां
हृदय में ध्यानु थो धारियां, जिनि जे अण गणिये जस खे चारई वेद था
गाइनि ।

सो०- गिराजु है नवती, मृदु कुसेयसं सम तनं ।

दीननि के गुरमीत, जलज समान जु बनि गुर ॥२६॥

जिनि जी वाणी मखण खां कोमलु आहे ऐं शरीरु गुलिड़नि जे समान
सुकुमारु आहे, जिनि जो सुभाउ बि कमल कोमलु आहे, उन दीननि जे
हृद दोखी गुर देव जी सदां जै हुजे ।

क०- बणितो सैं जोइ निकसे बचन तोइ सम,

सीतल तपत ते रहत अब मंद है ।

श्री हरि श्री हरि को तू ध्याइ राधाकृष्ण जू को,

बुध पितु मानो आवर्ततरियो रैनंद है ।

मुक्त रूप मान जांको है दरस भान,

तम चोर समरादि मधैं सु विलंद है ।

अनुकम्पा धारि प्रभ सीतलको मार मार ।

सब के आधार गुर आनंद के कंद है ॥२७॥

आनंद जो बादलु श्री गुरदेवु, तिनि जे चपड़नि मां जेके अमृत वचन
निकिरनि था से, ठंडिड़ा तपति ऐं पापनि खे मिटाइण में समर्थु आहिनि । हे
मुंहिजा मन ! तूं माया खे परे करे भगुवंत सरूप स्वामी श्री राधा कृष्ण जो
ध्यानु करि, जेके पृथ्वी अ ते चन्द्रमा जे समान प्रगटु थिया आहिनि । जीवन
मुक्त सरूप, सूरज जे समान तेजवान जिनि जे हृदय में उदय थियण सांणु
अविद्या रूपु राति मिटी थी वजे, जंहि करे कामादिक चोर बि भजी था वजनि ।

हे सभिनी जा आधार गुरदेव ! मां बालक गरीब श्रीखण्ड ते पंहिजी कृपा
करे कामादिक विकारनि खे मारे मिटायो ।

दो०- राधाकृष्णं गुर रुचिर मारतुंड आश्रयान ।

नाम नाव चढि भव उदधि केते तरे अजान ॥२८॥

हे प्यारा गुरदेव श्री राधाकृष्ण ! तवहां जो सूरज जे समान सुंदरु
मुखारिविंदु आ केतिराई अण ज़ाण तवहां जे नाम रूप बेड़े ते चढ़ी हिन
भव सागर खां पारि थिया आहिनि ।

सो०- नमो श्री जु राधाकृष्ण, श्री सूफी कुल शशी को ।

वारि जाउं तुम जिश्न, सीतलको करि मिहर घन ॥२९॥

सूफी कुल चन्द्रमा स्वामी श्री राधाकृष्ण खे नमस्कारु थो करियां,
जिनि मां बालक ते महिर करे भगुवंत जो घरु देखारियो आहे, उन्हनि तां
मां बलहारु वजां ।

क०- निहक समान प्रभ अलकं ज जानि गुर,

ऐसो श्री आनंद कंद राधाकृष्ण जानिए ।

नमो नमो देव ऐसे अलख अभेव प्रभ,

सीतलरदन छंद गाइ जु महानीए ।

उतिपल सम पाइ वंदौ श्री मनोहराइ,

जासु ध्यान कीए ते मनोभव नशानीए ।

ऐसो प्रभ गृह भव राधाकृष्ण सम रवि

रटत हदीस कवि कहत न जानीए ॥३०॥

हीरनि जे समान उजलु जिनि जी अलकावली आ उन आनंदकंद
अभेव प्रभू अ खे मां नमस्कारु थो कयां ऐं उन्हनि जो महानु जसु मां
बालकु चपिड़नि सां ग़ायां थो । श्री गुरदेव जे गुलिड़नि जहिड़नि मनोहर
चरणनि खे नमस्कारु थो कयां जिनि जे ध्यान सां कामादिक विकार नाशु
था थियनि । अहिड़ो कल्याण जो घरु सूरज समान स्वामीजनि जो जसु
गाईदे कवी पारु न था पाईनि ।

दो०- अंबुज लोचन कंज मुख श्री गुर दीन दयाल ।

महिखं ध्वज भव नाशु ह्वै ऐसे प्रभ छै माल ॥३१॥

दीननि ते दया करण वारे श्री गुर देव जा नेत्र कमलनि जहिड़ो
मुखिड़ो बि कमल जे समान आहे । कुशल कल्याण जो निधानु श्री गुरदेवु
जिनि जी कृपा सां यमराज जो भयु नाशु थो थिए ।

सो०- श्री गुर शमस सुफेद मनो सु तेज विभास कर ।

मारादिक सब भेद श्री गुर राधाकृष्णं जूं ॥३२॥

प्यारे गुरदेव श्री राधाकृष्ण जी सुन्दर अछिड़ी दाढी जणु सूरज जूं
कृणाऊं आहिनि । कामादिकनि खे मिटाइण में समर्थ आहिनि ।

चौ०- जात वेद सम काय प्रकाशू । ऐसो श्री प्रभ तेज विभासू ।

राधाकृष्ण जु दुख को नाशन सीतलको करु हृदय विगासन ॥३३॥

आत्मजं पै करुणा धारो । विखै ज्ञान मन ते निखारो ।

हृदय करो मम मृदु प्रसून सम । कब कुकरम बांहज न करो मम
॥३४॥

सूरज जे समान तापमान गुरदेव जे शरीर जो प्रकाशु अग्नि जे
समान आहे । हे प्रभू ! मां बालक जे हृदय में बृजमान थी मुंहिजे
सभिनी दुखनि खे नाशु कयो । पंहिजो बचिड़ो ज़ाणी मूं ते कृपा दृष्टि
कयो । विशय जी समझ मुंहिजे मन मां कढी छदियो, मुंहिजो हृदयु गुलिड़े
खां बि कोमलु कयो । कदहीं बि मुंहिजो हथु को खोटो कार्यु न करे, इहा
मूं ते कृपा करियो ।

दो०- राधाकृष्णं नरेश प्रभ सिखनि के रखवार ।

करि प्रभ सीतलशीतलं दया दीन पर धार ॥३५॥

हे दासनि जा रखवारा ! महाराज राजा जे समान स्वामी श्री
राधाकृष्ण जू ! मां बालक ते कृपालता धारे मुंहिजो हृदयु टिन्हें तापनि
खां निवृत्ति करे ठंडिड़ो कयो ।

सो०- सूफिनकुल रविभान, श्री गुर राधा कृष्ण जू ।

मनो कृष्ण विद्यमान ऐसो गुरु तारण तरण ॥३६॥

हे सूफियुनि जे कुल जा सूरज श्री स्वामी जू ! तवहां साक्षात श्री
कृष्ण भगुवान वांगियां तरण तारण आहियो ।

स०- राधाकृष्णजु आनंद रूप कृपा के जु कूप सदां सुखुदाई ।

पदजं प्रभ के मोक्ष के दाय मनो शशि मोती की चमक तहाई ।

तात पै तात करो ज कृपा सु कृपानिधि श्रीगुर तोख सदाई ।

सीतल जो जलज पद शीतल सीतलहै जोऊ परसत पांई ॥३७॥

आनंद रूपी स्वामी ! कृपा जा ऊन्हा खूह सदां सेवकनि जा सुखदाई,
मोतियुनि जे समान तवहां जी चमकंदड़ नख पंक्ति सदां मुक्ति दाता आहे
। मां बालक ते हे बाबा ! कृपा दृष्टि कयो, मूं ते सदां प्रसन्न रहो ।

थधनि गुलनि जे समान तवहां जे चरण गुलिङ्गनि खे मां बालकु गरीबु
श्रीखण्डु ठण्डे सुभाव सां स्पर्शु थो करियां ।

दो०- अभिवंदन प्रभ के चरण सीतलकर हृद वास ।

सीतलतडितं कीय सीतल तपति विनाश ॥३८॥

हे प्रभू ! मां तवहां जे चरणनि में वंदना थो करियां । मूं बालक जे
हृदय में चरण कमल निवासु करनि ऐं बिजली अ जे समान प्रकाशु करे
पंहिजी ठंडक सां सभु तपति मिटाए छदियो ।

सो०- श्री राधा कृष्ण सरूप, रावणारि सम तेज कीय ।

श्री अनामयं कूप, ऐण हरण चछ हरण प्रभ ॥३९॥

स्वामी श्री राधाकृष्ण जू रावण जे मारण वारे श्री रामचन्द्र जे समान
तेजवान आहिनि । शोभा ऐं कल्याण जी निधि प्यारा गुरदेव ! जिनि जा
हरण जहिड़ा नेण सभिनी दुखनि ऐं पापनि खे हरण वारा आहिनि ।

दो०- प्राणवत हों जुग अंब्र प्रभ जो श्री गुर गति दान ।

अंब्र बनज धनजं पदज श्री सतिगुर गति मान ॥४०॥

मां श्री गुरदेव जे जुगल चरणनि खे नमस्कारु थो कयां जेके बदे
पद जे दान दियण वारा आहिनि । संदनि चरण गुलिङ्गनि जहिड़ा ऐं नख
पंक्ति मोतियुनि वांगुरु सुन्दरु आहे ।

क०- विघ्न हरण हार राधा कृष्ण मोक्ष सार,

जुबा जग बार पर सम दृष्टि जानीए ।

कीर के समान बोल सदां है अदोल प्रभ,

कीरति अमोल सुकलोल लोल मानीए ।

सवा जाम जामिनी सु रहे उही अनमख,

लागी है भजन लिवंअनमख हानीए ।

सीतलपदारविंद सीतल सुवंदित है,

भूतल में वासु प्रभ सदां भव भानीए ॥४१॥

स्वामी श्री राधाकृष्ण मुक्ति जा दातार सभिनी विघ्ननि खे मिटाइण
वारा, बाल युवा बुढनि ते समान नज़र करण वारा ऐं अदोल बोल बोलण
वारा, नवीन नवीन सुन्दर कलोल करण वारा, जिनि जी कीरति बि
अमोल आहे, सवा पहर राति रही जागनि था ऐं तेल धारा वृति सां
पंहिजे इष्ट जे ध्यान में लवलीन था थियनि, तिनि जे ठंढिङ्गनि चरण

गुलड़नि खे मां बालकु वंदना थो कयां । हे पृथ्वी अ ते अवतार वठण
वारा प्रभू ! मुंहिजा सभेई संसा निवृत्ति कयो ।

सो०- इष्टा कर प्रभ मोर, सृष्टा कर भव मरण हरि ।

तुष्टा सायं भोर, श्री गुर छिमया कर प्रभू ॥४२॥

हे क्षमा जी खाणि गुरदेव ! मूं खे प्यारो करे दियो जंहि करे मुंहिजो
जनमु श्रेष्ठ थिए, मरण जी चिंता मिटी वजे । मां राति दींह ईश्वर जे
आनन्द में संतुष्ट रहां ।

दो०- साध हरो कर साध साधउ पंचा सादि ।

श्रीगुर राधाकृष्ण वर सीतलकर अहिलाद ॥४३॥

हे सतिगुर श्री राधा कृष्ण जू ! मुंहिजा सभेई भव मिटाए संत सुभाव
जी बखिशीश ऐं पंजनी चोरनि खे नासु करे मां बालक खे सची प्रसन्नता
जो दानु दियो ।

चो०- करुणा निधि श्री राधा कृष्णं । जस अपार जैसे है विष्णुं ॥

मैं तुफलं लीला क्या जानौं । बन निधि बिखे बून्द है मानो ॥

सन्तनि को है जस जग विदतं । कृपा करो सब सीतलजि शंत ॥४४॥

करुणा निधान श्री सतिगुर जो जसु श्री भगुवान जे जस समान
अपारु आहे । मां नंढिड़ो बालकु उन्हनि जी अगाध लीला खे छा
जाणींदुसि । ही जेको जस जो वर्णनु कयो अथमि सो सतिगुर जे जस जे
समुद्र जी हिक बूंद समुझो । संतनि जो जसु त सजो संसारु जाणे थो ।
सभेई संत मूं निमाणे बाल ते कृपा दृष्टि कयो ।

दो०- अबै कथा पुरणु करौं राधाकृष्ण सुजान ।

सीतलुशिशु अनजान है दया करो दासान ॥४५॥

सुजान शिरोमणि स्वामी श्री राधा कृष्ण जी कथा पूरण कयमि । हे
प्रभू ! मां अण जाण बालक खे पंहिजो दासु जाणी दया दृष्टि कयो ।

सो०- कृपा श्री नानक शाह पूरणं भई गथ दूसरं ।

सीतलकी सुनि आह करुणा कीनी जगत गुरं ॥४६॥

दो०- जस श्री आतमरात का पूरण किय रुचि लाइ ।

ओरो राधाकृष्ण गुर सब जस समपताइ ॥४७॥

सतिगुर नानक शाह जी कृपा सां हीअ बी कथा पूरणु थी ।मां
बालक जो सदिड़ो बुधी जगत गुर सतिगुर मूं ते कृपा कई । स्वामी
आत्माराम साहिब ऐं स्वामी राधाकृष्ण जो जसु रुचि सां पूरो थियो ।

सो०- आगे करें कथान, ज्ञानदास श्री ज्ञान घन ।

द्वीप प्रभाव प्रमान, इतिश्री भयो सु आपही ॥४८॥

हाणे वरी ज्ञान जे बादल स्वामी श्री ज्ञान दास जनि जो जसु वर्णनु
कंदुसि । हीउ सतों अध्यायु पूरण थियो ।

इति श्री गुर अष्टक सप्तम अध्याय ।

अथ अष्टम् अध्यायः

दो०- सिंध कबंध जस गुनं भयउ कबंध सिंप्रान ।

ईसतादिके देवनं गजाननं सुजान ॥१॥

कृपा निधान साहिब मिठिड़ा श्री गणेश भगुवान जी वन्दना था करनि जेको अठनी सिधियुनि खे दियण में समर्थ आ, जंहिजे शरीर ते हाथी अ जो मस्तकु रखियलु आहे जंहिजो जसु समुंड वांगुरु अथाहु आ, उन गजानन भगुवान जी जै हुजे, जै हुजे ।

सो०- श्री मारारीनंद, बारनाश्रयं गिरजजं ।

वन्दत सीतलमंद मेधा मेधा कर प्रभू ॥२॥

कामदेव जे दुशिमन, श्री शंकर जे पुटिड़े श्री पारवती अ जे लादुले, हाथी अ जे मुखिड़े वारे श्री गणेश भगुवान खे मां बालकु वंदना थो कयां । हे प्रभू ! मुंहिजी बुद्धि विशालु कयो ।

दो०- वंदि वाक बानं बहुरि कुसज चरण मृदु आल ।

श्री अंबा अंबुद विधं सीतलपरि जु दयाल ॥३॥

वरी श्री सरस्वती देवी अ जे गुलिड़नि जहिड़नि चरणनि खे नमस्कारु था कयूं । हे चंद्र वदनी माता ! मां बालक ते कृपा दृष्टि कयो ।

क०- अम्बिका भवानी मातु बुधि वरदानी,

सु कुसेयमं जु जावजं आनंद दाय वदितं ।

आश्रय तिमर हर सीतलजु हिम कर,

सीतल जोरत कर विघ्नं के मदतं ।

ऐसी मातु शोभावंत बुधि उजल करंत,

ध्यान के धरंत मात दोख के निकंदतं ।

दिखला करो हुलास करें जास ज्ञानदास,

पूरण करो जु आस कृपा के जु सिंघतं ॥४॥

हे अम्बिका भवानी माता ! श्रेष्ठ बुद्धि जो दानु दियण वारी अमां ! तुंहिजे आनंद दायक चरण कमलनि खे मां वन्दना थो कयां । तुंहिजो मुखड़ो चन्द्रमा जे समान ठण्डिड़ो ऐं अविद्या जी ऊंदहि मिटाइण वारो आहे । मां बालक बई हथिड़ा जोड़िया, मुंहिजा सभेई विघ्न मिटायो । शोभानिधान महरवान माता ! बुद्धि खे ऊजल करण वारी अमां ! तुंहिजो

जे के ध्यानु था धारीनि तंहि जा सभेई दोष नाशु थी करीं । हे कृपा जी समुद्र माता ! मुंहिजी बुद्धि खे हुलासु दे, इहा मुंहिजी आस पूरी करि त स्वामी ज्ञान दास जिनि जो जसिड़ो ग़ायां ।

सो०- वंदो बाहज जोरि कुसखानी दुहिता पती ।

प्रणवत अम्बर मोर, धी उजार मिहराश्रयं ॥५॥

मां बई हथिड़ा जोड़े समुंड जी कन्या जे पती अ श्रीनारायण भगुवान खे वन्दना थो कयां । हे सूरज समान तेजस्वी प्रभू ! मुंहिजी बुद्धी अ खे उजारो कयो ।

दो०- वारिध तन्या पतिहिंको वंदत वारों वार ।

श्री जगत्‌ेश्वर कृपा करे वरणों कथा सुधार ॥६॥

श्री लक्ष्मी नाथ प्रभू अ खे मां वार वार नमस्कारु थो कयां हे जगत जा ईश्वर प्रभू ! मूं ते कृपा कयो त मा अमृत रूपु कथा जो वर्णनु कयां ।

क०- साधके हनन हार साध अनमथ मार,

साध अंब्र देवो बार साध करे जग मैं ।

अम्बज जांबज प्रभु अब्रंज धनज सम,

तास सिकर्क होइ रहो महं दोखी मग मैं ।

कोमल मनोराइ पान प्रभ मोक्ष दाइ

काय जातु वेद सम राखु ध्यान पग मैं ।

सीतलकरो जु हृद प्रभ अनामय दध ।

सीतल जु ध्यान राख अनमोल नग मै ॥७॥

सभिनी भवनि खे मिटाइण वारा, साधकनि जा विकार नाशु करण वारा प्रभू ! मूं खे संतनि जो चरणामृतु देई संसार में संतु बणाईमि । हे प्रभु ! पंहिजे चरण गुलिड़नि जे मोतियुनि जहिड़ी नख पंक्ति जो भौरो बणाइ । मां तवहां जे दर जो घणनि दोषनि सां भरियलु सेवकु आहियां । पंहिजो कोमलु मनोहर ऐं मुक्ति दाता नृमलु हथिड़ो मुंहिजे मस्तक ते रखो । शल तवहां जे चरण कमलनि जो मूं खे सदां ध्यानु हुजे । हे कुशल कल्याण जा समुद्र प्रभू ! पंहिजनि हीरनि जहिड़नि नख पंक्ति जो ध्यानु देई मुंहिजे हृदय खे ठंढिड़ो कयो ।

सो०- रुचिर सुजस मम भाख, ज्ञान दास करुणा निधे ।

भव कर भव भव नाथ श्री भवरूप गुररिमर ॥८॥

मां श्री स्वामी ज्ञानदास जो सुंदरु जसिड़ो वर्णनु थो करियां । हे शंकर सरूप श्रेष्ठ गुरदेव, मुंहिजा सभेई भव मिटाए कल्याणु कयो ।

दो०- रत्नाकर गुण रूप रवि सुंदर गिरा जु धार ।

श्री गुर भासमयं बरज सीतलस्रक करि सार ॥९॥

जिनि जा गुण समुंड जे समान अथाह आहिनि, सूरज जे समान जिनि जो रूपु आहे, जिनि जी वाणी अत्यंत मधुर आहे, जिनि जी शोभा कमलनि वांगे मोहकु आहे, उन जी श्री गुरदेव जी जै हुजे । मां बालक जे हृदय में सारु सिक जी बखिशीश करनि ।

के०-सीतल को सीतलु करो जु मलयज सम,

गंध सार बान प्रभ ज्ञान दास जानिए ।

अबंज के सम बाणी साध महख ध्वज हानी,

अंबुके अम्बुज सम कंद्रपादि हानीए ।

अमीकर के समान वक्रत जु शोभ मान,

ऐसो प्रभ भद्र खान विघ्नं नशानिए ।

गुणों के कूपार को मकरी नंहि पावे पार

देहु निज नाम कार उदप समानीए ॥१०॥

परम कृपाल स्वामी ज्ञानदास जू ! तवहां जो सुभाउ चंदन जे समान आहे । कृपा करे मूं बालक खे बि चंदन जे समान ठण्डो कयो ।

हे प्रभू ! तवहां जो कमल जहिड़ो मुखड़ो, समुंड वांगे गम्भीर वाणी अ जा कामदेव आदिक विकारनि खे मिटाए थी छदे ऐं यमराज जो भउ बि दूरि थी करे । हे कल्याण जी खाणि, सभिनी विघ्ननि खे नाशु करण वारा गुरदेव ! तवहां जो मुखड़ो चन्द्रमा जे समान शोभावारी आहे । तवहां जा गुण समुद्र जे समान अथाहु आहिनि । मां मछुली कींअ पारु पाए सघंदसि । कृपा करे पंहिजे नाम जी नौका देई मूं खे पारि कयो ।

मां बालक ते कृपा करण वारा स्वामी ज्ञानदास जू ! तवहां करुणा जा समुद्र आहियो, बादल जे समान कुशल कल्याण जूं बूंदू वसाए मूं खे निहालु कयो ॥११॥

सन्दरु शोभावान श्री गुरदेव दुखनि ऐं कलियुग जी मलीनताउनि खे मिटाइण वारा साहिब तवहां जो मुखड़ो सदा कमल जे प्रफुलित आहे ।

तवहां जे अडण में अठई पहर आनंदु आहे, कदहीं बि का विरोध गाल्हि कान आहे ॥१२॥

बृह्मा जे समान शोभाशाली स्वामी ज्ञानदास जू ! ज्ञान ऐं वैराग खे प्रघटु करण वारा, सूरज जे समान प्रकाशवान, सुहागिणि सती अ जी बुधि वांगुरु कल्याण निधान गुरदेव, संसार में विहार करण वारा मालिक ! तवहां सभिनी विकारनि जो त्यागु करे छदियो आहे, पंहिजे ब्रचनि खे बि सम ऐं संतोष जा दानु दियो । सुंदर सेजा ते शयन करण वारा प्रभू मां दास ते दयाल थियो ॥१३॥

संसार जे झगड़नि ऐं दुखनि खां रहित गुरदेव ! कामादिक राक्षसनि खे नाशु करण में अगिनि जे समान समर्थ गुरदेव जी जै हुजे ॥१४॥

अरिजन जे पिता राजा इन्द्र जे समान सभिनी दासनि जे मालिक, टिन्हीं तापनि खां परे देवताउनि समान विहार करण वारे स्वामी ज्ञानदास जी सदां जै हुजे ॥१५॥

टेढ़ी भृकुटी करे जंहि बि जीव दे निहारिनि था त उहो जीवु थरि थरि कम्बे थो, अहिड़े प्रतापशाली गुरदेव जे गुलिड़नि जहिड़नि चरणनि में मां तनु मनु अर्पणु थो कयां । मां बालकु टेढ़े सुभाव वारो पर तवहां चन्द्रमां जे समान सुखकर आहियो । हे मुक्ति जा दातार कृपा जा बादल स्वामी ज्ञानदास जू ! आकाश गंगा जे समान तवहां जा चरण कमल पवित्र आहिनि ऐं सभिनी पापनि दुखनि खे निवृत करण में समर्थ आहिनि । तवहां जो तेजु सूरज समान प्रभावशाली आहे । हे गुरदेव तवहां जी जै हुजे ॥१६॥?

प्रभात जे समय जेके भजन में मगनु था रहनि, जिनि कामादि विकारनि खे नष्टु कयो आहे, अहिड़े गुरदेव जे शोभा रूपु सागर में मां मछीअ वांगे सदां तुड़िगदी रहां । सतिगुर जो शरीरु सोन वांगुरु आ, मुंहिजो शरीरु रख वांगे आ । पंहिजे परम कृपा प्रसाद सां पारस रूपु गुरदेव मूं खे बि सोनो बणायो ॥१७॥

जंहि सतिगुर देव जा चरण कमलनि जहिड़ा, दंदिड़ा मोतियुनि
जहिड़ा, मोह जी ऊंदहि मिटाइण वारा, बादल जे समान कृपा जी वर्षा
करण वारा आहिनि, जिनि जे शरीर जी
शोभा अमृत जल जे समान आहे । मां भंवरु थी उन शोभा रूप जल में
पियो हुजा ।

मुंहिजो नालो त ठंडिड़ो आहे पर आहियां वृह अग्नि जो घरु, सदां
वृह में जरि जरित थी अधीरु थी पवां । हे ठंढिड़े स्वभाव वारा गुरदेव !
पृथ्वी अ ते आकाश गंगा वांगुरु पावन प्रभू ! मां बालकु तवहां खे हथिड़ा
जोड़े प्रणामु थो करियां॥१८॥

तवहां जे थोरो बि मूं द्राहुं कृपा मां न निहारींदो त मां बिना जल जे
मछीअ वांगुरु तड़िफंदो रहंदुसि । हे स्वामी ज्ञानदास ! मां बालक खे श्री
शंकर सुरूपु ठंढिड़ो कयो॥१९॥

हे दासनि जी सुख राशि श्री सतिगुर ज्ञानदास ! तवहां पंहिजी कृपा
सां यमराज जे भव खे हिकिड़ी क्षण में मिटाए था छदियो॥२०॥

हे कमल नैन प्रभू ! सकल गुण धाम साहिब ! कोकिलि वांगुरु मधुर
बोल बोलण वारा, कल्याण जी निधि सुजान शिरोमणि प्रभू ! मां बालक
जा सभेई दुख दूरि कयो । तवहां जा चरण कमल पुण्यात्मा सेवकनि जी
संसार जी फांसी काटीनि था । अहिड़ो समर्थु स्वामी ज्ञानदासु मुंहिजो वदो
आसिरो आहे । चन्द्रमां जे समान प्रकाशवान प्रभू अ जी जै हुजे॥२१॥

हे आनंद कंद प्रभू ! तवहां जी जै हुजे, जै हुजे । हे सूफियुनि जे
कुल जा कमल दासनि जे हृदय आकाश जा चन्द्रमां श्री गुरदेव ज्ञानदास
जू ! तवहां जे चरण कमलनि में मां प्रणामु थो करियां॥२२॥

कंस निकंदन प्रभू अ समान रूपवान ! कामादिक राक्षसनि खे नाशु
करण वारे करुणा निधान श्री गुरदेव तां मां लख लख दफा कुरिबानु
थियां ॥२३॥

श्रीकृपाराम जे कुमार स्वामी ज्ञान दास जू दुखनि मिटाइण वारा ऐं
बुधि जा उदार आहिनि तिनि जे चरणनि में मां बालकु वंदना थो कयां ।
उन सुखरासि करुणा धाम प्रभू अ मूंखे पंहिजे चरण कमलनि जो आसिरो

दिनो आ । जिनिजा लोचन कमल जे समान सभु मलीनताऊं मिटाइण
वारा आहिनि, जंहि जी कृपा सां सभिनी जीवनि जो क्रोधु नाशु थी वियो
आहे । हे प्रभू श्री ज्ञानदास ! मां बालक खे तवहां जी कृपा जी आस
आहे । कामादिक विकारनि खे नासु करे दास जी लज रखो॥१४॥

हे सभिनी पुरुषनि में उत्तमु स्वामी ! तवहां जो मुखड़ो चन्द्रमा जे
समान विशालु आहे । तवहां जे गुलिड़नि जहिड़नि रसीलनि चरणनि में
मां प्रणामु थो करियां ॥१५॥

तवहां जे विशाल मस्तक खे मां वंदना थो कयां जंहिजो तेजु सूरज
जी किरणाउनि जे समान आहे । हे कुशल कल्याण जा घर स्वामी जू !
मां बालक जी घटि वधाई सभु क्षमा कयो॥१६॥

समुद्र जे समान गम्भीर, ज्ञान जा बादल गुरदेव ! पंहिजनि दासनि
खे मुक्ति जा सुख बख़शण वारा, अधराति गुज़रिये खां पोइ निद्रा खे छड़े
प्रभू अ जे ध्यान में मगनु थियण वारा साहिब ! मां अणज़ाणु बालकु
आहियां, मुंहिजा सभेई अपराध पंहिजी मधुर कृपा सां क्षमा कयो ऐं इहो
वरदानु दियो त मुंहिजे पवित्र हृदय में प्रभू अ जो ध्यानु ऐं मन में संतनि
जो नित्य निवासु थिए॥१७॥

हे मुंहिजा सदोरा मन ! तूं बियूं सभु आशाऊं छड़े संतनि जी अहिड़ी
सेवा करि जो तोखे स्वामी श्री ज्ञानदासु प्रभू प्रसन्न थी निर्वाण सुखनि जो
इनामु दियनि॥१८॥

मां सेवक बालक खे पवित्र बुधि जे दान दियण वारा स्वामी श्री
ज्ञानदास जूं तवहां जी सदां जै हुजे । निश्चय ही तवहां जो प्रकाशु
चन्द्रमा जे समान आहे॥१९॥

हे कामदेव खे मथनु करण वारा दीनदयाल प्रभू ! तवहां जी आत्मा
में सदां श्री विष्णु नारायण जो निवासु आ । हे वाणी अ जी बख़िशीश
करण वारा गुरदेव ! सूरज समान शोभावान करुणा निधान गुरदेव ! मां
बालकु तवहां जो हृदय में ध्यानु थो धारियां । तवहां जी शोभा सूरज
वांगुरु आहे तंहि में मां पतंगु थी तवहां जो जसु गानु कयां । मुंहिजो
दास भाउ सदां चमकंदो रहे । अहिड़ो श्री गुरदेवु जंहिजी शरणि जगत में

सारु आ, मां बालक खे जिनि पंहिजे नाम जपण जो आधारु दिनो आ
तिनि तां मां बलहारु वजां॥३०॥

चन्द्रमा जे समान करुणा अमृत धाम, अमृत जी वर्षा करण वारा
गुरदेव कृपा करे पंहिजे दास खे शील ऐं सत्यता जो दानु दियो॥३१॥

हे प्रभू ! तवहां जा हथिड़ा गुलनि जहिड़ा ऐं नख पंक्ति मोतियुनि
जहिड़ी आहे । हे करुणा सिंधु कृपाल तवहां जी सदां जै हुजे॥३२॥

चरण कमल जी नख पंक्ति मोतियुनि जहिड़ी आहे जिनि जी चमक
चन्द्रमा जे समान आहे । उन्हनि चरणनि खे मां हृदय में धारणु थो कयां
। जिनि जे प्रताप सां कामु क्रोधु अभिमानु नाशु थी था वजनि । हे शंकर
सरूप गुरदेव ! मुंहिजो कल्याणु करि । तवहां जी महिमा अगमु आहे ।
अनुपम आहे । उहे मूर्ख आहिनि जे तवहां जे श्री गंगा सम पावन
चरणनि खे छदे बिए पासे था भटिकनि । हे कृपा निकेत प्रभू ! तवहां जे
चरण गुलिड़नि सां घणो प्यारु आहे । हे सूरज समान मुखिड़े वारा
कृपाल प्रभू तवहां मूं बालक जा सदां रक्षक आहियो॥३३॥

प्रभू ! तवहां अणगणियें आनन्द जी निधि आहियो, तवहां जे सिमरण
सां सभेई भव मिटी था वजनि । हे आनंद जा बादल स्वामी ज्ञानदास जू
! मां अबोझु तवहां जी शरणि आहियां॥३४॥

श्री स्वामी ज्ञानदास, जिनि जा चरणकमल मां बालक जे हृदय मन्दिर
में सदां ब्राजमानु आहिनि, जिनि जे ध्यान करण सां सभु कलियुग जा
दुख नाशु था थियनि । जिनि ते मुखिड़े जो प्रकाशु सूरज जे प्रकाश खां
बि मथे आहे, अहिड़ो दीन दयालु प्रभू बियो न मिलंदो । करुणा जो
समुद्र साहिबु उन्हनि दासनि खे मुक्ति दियणवारा जेके बि चरण कमलनि
जो जसु था गाईनि । हे महरबान स्वामी ! मूं खे इहो वरदानु दियो जो
तवहां सां मुंहिजो नींहु जुड़े । कृपा करे मुंहिजे मन खे पंहिजे चरणनि
में लायो॥३५॥

स्वामी जनि जे मुखिड़े जी शोभा अहिड़ी आहे जणु सूरजु उदय
थियो आहे । विशाल कमल जे समान जिनि जा हथिड़ा आहिनि । गुरदेव
जा चरण त मखण खां बि कोमलु आहिनि ।

चरण नखनि जी पंक्ति मोतियुनि वांगे चमकंदड़ ऐं सन्दरु आहे । जिनि बि स्वामी जनि जी उपासना कई तिनि जी बुधि प्रकाशमान ऐं तेजु थी वेई । हे दीनबंधु परम कृपाल प्रभू ! मां बालकु तवहां जी शरणि आयो आहियां । तवहां करण कारण समर्थ आहियो । तवहां जा रस भरिया चरणकमल संसार सागर खां तारण में पूरणु शक्तिमान आहिनि॥३६॥

हे मुंहिजा सदोरा मन ! अहिड़े सुखनि जे घर श्री गुरदेव खे कढ़हीं बि न छड़िजांइ । दासनि जे पापनि मिटाइण वारे गुरदेव जे पावनु चरणनि जो पोपटु थी पउ॥३७॥

सतिगुर साहिब जो चितु जढ़हीं प्रसन्न थो थिए तढ़हीं कंगाल खे लक्ष्मीवानु था बणाईनि । उन्हीय जो सभु भेदु भाउ बि सभु नाशु थो थी वजे ऐं उन जे हृदय में पारबृह्म जो प्रकाशु थो थिए । परम आनंद सरूप श्री गुरदेव जो चितु परम आनंद रूपु पारबृह्म सां जुड़ियलु आहे । रस जा प्यासा प्रेमी थी उन जो पानु करे मगनु था रहनि । चितु सदाई शांति ऐं भजन आनंद वारो अथनि॥३८॥

मां अजाणु बालकु गुरदेव जे परम महान प्रताप खे न थो जाणां । हे करुणा निधान प्रभू ! मां गरीब श्रीखण्ड खे कृपा जो दानु दियो । हे सूरज समान प्रभू ! मां मन करम वाणी अ करे तवहां जो ध्यानु थो धारियां । मां बालक जी बुधि खे कृपा करे उज्जवलु कयो । मां याचकु तवहां खां इहा कृपा थो घुरां॥३९॥

श्री शंकर भगुवान ! श्री विष्णु नारायण ! तवहां जे कृपा सां जगदीश्वर गुरदेव जो जसु पूरण थियो । हे कृपा निधान मां बालकु तवहां जे चरणनि में वंदना थो करियां । मुंहिजे मथां भली प्रकार कृपा दृष्टि कयो । कृपा जे समुद्र सतिगुर नानक शाह साईअ मां बालक जी पुकार बुधी हीअ जस जी कथा कृपा करे पाण पूरणु कई आहे । मां बालक खे उन्हनि जे कल्याण रूप चरण कमल जो ई आधारु आहे॥४०॥

स्वामी श्री आत्माराम साहिबु सूफियुनि जे कुल जो सूरजु आहे । सुजान शिरोमणि स्वामी श्री राधाकृष्ण कामदेव खे नाशु करण में सदां समर्थ आहिनि॥४१॥

सतिगुर ज्ञानदास स्वामी ज्ञान जा बादल, कृपा जा भण्डार ऐं चन्द्रमां
जे समान प्रकाश वानु आहिनि । उन्हनि जे चरण कमलनि में मां दासु
गरीब श्रीखण्डु प्रणामु थो करयां॥४२॥

क०- स्वामी श्री ज्ञानदास जनि जी कथा सुंदर रीति सां पूरणु थी ।
हिन सतिगुरनि जे आज्ञा सां मां बालक उन जो प्रकाशु कयो । हिन
संसार में श्री सतिगुरु ई कल्याण करण वारो आहे; उन दीन दयाल प्रभू
अ मूं बालक जी सम्भाल करे मुंहिजी अविद्या जी ऊंदहि मिटाई । हाणे
सतिगुरनि जी आज्ञा वठी विक्रमी सम्बत जो वर्णनु थो कयां । सतिगुर
नानक शाह जी कृपा सां सम्बत १६६१ में हीय कथा वर्णनु कयमि॥४३॥

विक्रमी सम्बत १६६१ में हीउ शास्त्रु मां बालक गरीब श्री खण्ड
पूरण करे जगत में जाहिरु कयो॥४४॥

वैसाख महीने जी शुक्ल पक्ष जी चोदसि तिथि सोमवार ते ही श्री
गुर अष्टक पूरणु थियो॥४५॥

श्री गुर अष्टक जा हीउ अठ सुन्दर अध्याय मूं वर्णनु कया । श्री
सतिगुर नानक देव जे कृपा सां मां बालकु गरीबु श्री खण्डु सेवकु
सभिनी संतनि खे प्रणामु थो कयां । मां जगत गुर सतिगुर नानक शाह
जे चरणनि में वंदनु थो कयां । सूरज सरूप स्वामी आत्माराम साहिब जे
चरणनि में बि नमस्कारु थो कयां । परमात्मा सरूप श्री स्वामी
राधाकृष्ण जे पाद पद्मनि में मां सिरु थो झुकायां । अज्ञान जी ऊंदहि
मिटाइण वारे स्वामी ज्ञानदास जे पावन चरणनि में करबध वंदना थो
कयां॥४६॥